SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी पत्रिका

संवाद

अष्टम अंक (मार्च 2026)

महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना)
नई दिल्ली का कार्यालय

तृतीय तल, 'ए' स्कंध, इन्द्रप्रस्थ भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह
CENTRAL JAZZ BAND
ITBP

हिंदी दिवस -2025 एवं
पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
હિન્દી દિવસ-2025 અને
પાંચમું અખિલ ભારતીય રાજભાષા સંમેલન
14-15 सितंबर/ સપ્ટેમ્બર , 2025

संवाद समिति

श्री प्रमोद कुमार
अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

श्री अभिषेक जैन, निदेशक (प्रशासन)

सुश्री पूनम शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा)

सुश्री अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

संवाद पत्रिका परिवार

महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना) का कार्यालय, नई दिल्ली की
अर्धवार्षिक पत्रिका

संरक्षक

श्री प्रमोद कुमार
अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

परामर्शदाता

श्री अभिषेक जैन, निदेशक (प्रशासन)

(सम्पादक)

सुश्री पूनम शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा)

(सह-सम्पादक)

सुश्री अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

-:अस्वीकरण:-

रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे संरक्षक, परामर्शदाता तथा सम्पादक मंडल आदि का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुद्रक:

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

अनुक्रमणिका

गृह मंत्री जी का संदेश 05
अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का संदेश 07
निदेशक (प्रशासन) महोदय का संदेश 08
संपादकीय 09

क्र.सं.	विषय	रचना	रचनाकार का नाम एवं पदनाम सर्व श्री / श्रीमती / सुश्री	
1.	वृन्दावन और गोवर्धन की तीर्थ यात्रा	यात्रा–वृत्तांत	राजा ओमर, लेखापरीक्षक	12
2.	समंदर की हर लहर कुछ कहती है...	कविता	मनोज मधुकर कस्तूर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	18
3.	दिल्ली से लद्दाख बस की यात्रा	यात्रा–वृत्तांत	मोहित तोमर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	20
4.	अपनी भाषा अपना मान	कहानी	पूनम शर्मा, सहायक निदेशक	29
5.	अंधेरों के पार–सत्य की जीत	लेख	ऐश्वर्या राय, लेखापरीक्षक	35
6.	आखिरी टिफिन	लेख	महेश कुमार, लेखापरीक्षक	42
7.	दिव्यांगजन और व्हीलचेयर टेनिसः अटूट हौसलों की कहानी	लेख	फिरोज़ हसन, सहायक पर्यवेक्षक	46
8.	अनुभव	कविता	प्रशांत ओमर, राजा ओमर, लेखापरीक्षक के भाई	49
9.	प्रेम–वल्ली	कविता	अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक	50
10.	मज़दूर के संघर्ष की कथा	लेख	संजय यादव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	51
11.	राम ही मेरे प्राणपति हैं	कविता	नवीन, लेखापरीक्षक	57
12.	ज़िंदगी एक दौड़	लेख	मनोज कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	59
13.	'पधारो म्हारे देस'	यात्रा–वृत्तांत	गुंजन जाजोरिया, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	62

कार्यालयीन गतिविधियां

1.	हिंदी पखवाड़ा, 2025 की कुछ झलकियाँ	71
2.	दिल्ली क्षेत्र के सामूहिक ऑडिट दिवस, 2025 के दौरान कार्यालय में, आयोजित कुछ खेल प्रतियोगिताओं के दृश्य	75
3.	ऑडिट दिवस 2025, की झलकियाँ	76
4.	कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशालाएं	78
5.	वर्ष 2025 में सेवानिवृत्ति समारोहों के चित्र	79
6.	श्री निखिल अरोड़ा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा विजित प्रतियोगिताएं	80
7.	कार्यालय में आयोजित स्वास्थ्य जांच शिविर एवं रक्तदान शिविर	81
8.	दिसंबर 2025 को समाप्त तिमाही हिंदी बैठक संबंधी कुछ छायाचित्र	83
9.	सुश्री मनीषा, लेखापरीक्षक द्वारा बनाई गईं कुछ चित्राकृतियाँ	84
10.	राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह 2025, हैदराबाद तथा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन नई दिल्ली में इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग की सहभागिता एवं सम्मेलन संबंधी कुछ छायाचित्र	85

गृह मंत्री जी का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'संवाद' अपने आठवें अंक के पड़ाव पर पहुँच चुकी है। किसी भी संस्थान की पत्रिका केवल शब्दों का संग्रह नहीं होती, बल्कि वह उस संस्थान की सामूहिक चेतना, कार्य-संस्कृति और रचनात्मकता का जीवंत प्रतिबिंब होती है।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कंधों पर सार्वजनिक वित्त की शुचिता और पारदर्शिता बनाए रखने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। इस चुनौतीपूर्ण कार्य के बीच, 'संवाद' जैसा मंच हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी अभिव्यक्ति और नवाचारों को साझा करने का अवसर प्रदान करता है। यह न केवल हमारी साहित्यिक अभिरुचि को निखारता है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के हमारे संवैधानिक संकल्प को भी सुदृढ़ करता है।

पत्रिका का यह 'अष्टम अंक' न केवल ज्ञानवर्धक लेखों और सूचनाओं से समृद्ध होगा, बल्कि यह हमारी टीम भावना को भी नई ऊर्जा प्रदान करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और उन सभी लेखकों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचारों से इसे मूर्त रूप दिया है।

शुभकामनाएं कि 'संवाद' का यह सफर निरंतर जारी रहे और यह हमारे कार्यालयी जीवन में बौद्धिक चेतना का संचार करता रहे।

प्रमोद कुमार

प्रमोद कुमार
अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका 'संवाद' के नवीन अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संस्थान की प्रगति में 'संवाद' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह न केवल सूचनाओं के आदान–प्रदान का माध्यम है, बल्कि हमारे विचारों, नवाचारों और सामूहिक उपलब्धियों का प्रतिबिंब भी है।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से, राजभाषा हिंदी का प्रयोग न केवल संवैधानिक दायित्व है, बल्कि यह हमारे और आम जनमानस के बीच संवेदनात्मक जुड़ाव का सेतु भी है। 'संवाद' पत्रिका हमारे कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक में संकलित लेख, कविताएं और संस्मरण पाठकों को प्रेरित करेंगे और कार्यालय में एक सकारात्मक एवं ऊर्जावान वातावरण का निर्माण करेंगे।

मैं इस पत्रिका के सफल संपादन और प्रकाशन के लिए संपादक मंडल तथा उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपने बहुमूल्य योगदान से इसे जीवंत बनाया है।

मैं 'संवाद' के इस अंक की सफलता के लिए अपनी मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

अभिषेक जैन
निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

'संवाद' के आठवें अंक के साथ हम पुनः आपके सम्मुख हैं। किसी भी संस्था की पत्रिका केवल पन्नों का संग्रह नहीं होती, बल्कि वह उस संस्था के वैचारिक विकास, उसकी कार्यक्षमता और उसकी भाषाई निष्ठा का प्रतिबिंब होती है। 'संवाद' का यह अंक हमारे इसी सामूहिक पुरुषार्थ का एक नया पड़ाव है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में 'राजभाषा हिंदी' की भूमिका केवल एक संपर्क भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे प्रशासन और जनता के बीच के फासले को पाटने वाला सबसे सशक्त सेतु है। केंद्र सरकार के कार्मिक होने के नाते, हमारा यह संवैधानिक दायित्व भी है और नैतिक कर्तव्य भी कि हम अपने दैनिक कामकाज में हिंदी को न केवल अपनाएँ, बल्कि उसे सहज और सरल बनाकर जन–जन तक पहुँचाएँ।

प्रायः यह धारणा रहती है कि सरकारी कामकाज की भाषा कठिन और बोझिल होती है। लेकिन हमें यह समझना होगा कि भाषा वही श्रेष्ठ है जो बोधगम्य हो। यह अंक इसलिए विशेष है क्योंकि इसमें न केवल हमारे सहयोगियों की साहित्यिक प्रतिभा (कविताएं और कहानियाँ) झलकती है, बल्कि इसमें 'डिजिटल इंडिया' के दौर में हिंदी की बढ़ती प्रासंगिकता पर भी गंभीर विमर्श शामिल है। तकनीकी युग में हिंदी अब पिछड़ नहीं रही, बल्कि ई–ऑफिस और एआई के माध्यम से नए पंख लगा रही है।

हमारा उद्देश्य केवल लक्ष्य प्राप्ति या आंकड़ों का मिलान करना नहीं है, बल्कि एक ऐसी कार्य–संस्कृति विकसित करना है, जहाँ हिंदी बोलना और लिखना हीनता का नहीं, बल्कि गर्व का विषय हो। जैसा कि कहा गया है– 'भाषा संस्कृति की संवाहिका होती है', तो आइए हम अपनी राजभाषा को समृद्ध कर, अपनी संस्कृति को और भी सशक्त बनाएँ।

आशा है कि 'संवाद' का यह आठवां पुष्प आप सभी को पसंद आएगा और आपको अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करेगा। आपके सुझाव हमारे लिए संबल होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

सहायक निदेशक

आपके पत्र

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय - प्र. महालेखाकार (लेप.-I), ओडिशा, भुवनेश्वर
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
O/o THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), ODISHA, BHUBANESWAR

दिनांक - 08.10.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्या.महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना)
नई दिल्ली -110002

विषय : हिंदी पत्रिका 'संवाद' के 7वें अंक की पावती का प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'संवाद' के 7वें अंक की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं छायांकन अति आकर्षक है । पत्रिका की सभी रचनाएं उत्कृष्ट कोटि की हैं, विशेषकर सुश्री पूनम शर्मा का लेख 'राजभाषा हिंदी : स्वरूप, स्थिति और महत्व', श्री राजेश कुमार सिंह की कविता 'जीवन का सफर', सुश्री अन्नू बाजपेयी का लेख 'कार्यालय और पर्यावरण जागरूकता', सुश्री सुप्रिया सिंह की कविता 'कबाड़ीवाला - एक पर्यटक का सपना' आदि रचनाएं सराहनीय एवं संग्रहणीय हैं । एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है जो सराहनीय है । कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका में चार-चाँद लगा रहे हैं ।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

दिनांक 13-10-2025

सेवा में
सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा(अवसंरचना),
नई दिल्ली-110002

विषय:- हिंदी पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर सुश्री पूनम शर्मा की "राजभाषा हिंदी: स्वरूप, स्थिति और महत्व", श्री नवीन की "अच्छे लोग भी मिल जाते हैं", श्री अमित कुमार की "भटका हुआ मुसाफिर" एवं श्री संजय यादव की "खिड़की की ओर" आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

सेवा में
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(अवसंरचना), नई दिल्ली

विषय - कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की ई-प्रति का प्रेषण।

महोदय,

सहायक निदेशक
(राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
O/o THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), ODISHA, BHUBANESWAR

दिनांक - 08.10.2025

विषय : हिंदी पत्रिका 'संवाद' के 7वें अंक की पावती का प्रेषण ।

वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,
सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ - 60017
OFFICE of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T.,
Sector-17E, CHANDIGARH – 160017
फोन (Phone): 0172- 2702306, 2703117, 2709576,
ई-मेल(E-mail)- agaepunjab@cag.gov.in

दिनांक: 09/10/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना), नई दिल्ली,
नई दिल्ली - 110002

विषय: कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की पावती प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदय के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय
Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 09-10-2025
11:43:13
सहायक निदेशक (राजभाषा)

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

दिनांक : 15.10.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
नई दिल्ली

विषय:- अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की पावती।

महोदय,

भवदीय,

Phone: 0532-2423485 Fax: 0532-2423485

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI

दिनांक 23-10-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा,
नई दिल्ली-110002

विषय: कार्यालयीन पत्रिका "संवाद" के सप्तम अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1.	सुश्री पूनम शर्मा	[illegible]
2.	सुश्री सुप्रिया सिंह	[illegible]
3.	सुश्री अन्नू बाजपेयी	कार्यालय और पर्यावरण जागरूकता
4.	श्री राजेश कुमार सिंह	[illegible]
5.	श्री अमित कुमार	भटका हुआ मुसाफिर
6.	[illegible]	[illegible]
7.	श्री संजय कुमार सिंह	[illegible]

भवदीय

SUMITH S

सहायक निदेशक/राजभाषा

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,
OFFICE of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T.,
Sector-17E, CHANDIGARH – 160017
फोन (Phone): 0172- 2702306, 2703117, 2709576,
ई-मेल(E-mail)- agaepunjab@cag.gov.in

दिनांक: 09/10/2025

Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 09-10-2025
11:43:13

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/234 दिनांक/Dated: 07.10.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(अवसंरचना), नई दिल्ली
तृतीय तल ए-स्कन्ध, इन्द्रप्रस्थ भवन
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली- 110002

विषय - कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की ई-प्रति का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'संवाद' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। जीवन का सफर, राजभाषा हिंदी: स्वरूप, स्थिती और महत्व, पिता: एक अनकहा प्रेम, असली दुश्मन कौन है आदि रचनाएं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की महत्ता समाहित है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/ I/1161506/2025 दिनांक:13-10-2025

सेवा में

सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा(अवसंरचना),
नई दिल्ली-110002

विषय:- हिंदी पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका 'संवाद" के सप्तम अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर सुश्री पूनम शर्मा की "राजभाषा हिंदी: स्वरुप, स्थिति और महत्व", श्री नवीन की "अच्छे लोग भी मिल जाते हैं", श्री अमित कुमार की "भटका हुआ मुसाफिर" एवं श्री संजय यादव की "खिड़की की ओर" आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ
तृतीय तल, ऑडिट भवन, टीसी-35-वी-1,
विभूति खंड, गोमती नगर
लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226 010

Office of the Principal Director of Audit (Central), Lucknow
III[rd] Floor, Audit Bhawan, TC-35-V-1,
Vibhuti Khand, Gomti Nagar,
Lucknow, Uttar Pradesh - 226 010

पत्रांक सं.: प्र.नि.ले.प.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./फा.सं. 82047/2025-26/I/1176197/2025
दिनांक: 28-10-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक(राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना) का कार्यालय,
नई दिल्ली ए-स्कंध, तृतीय ताल, इंद्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्ली-110002

विषय - अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "संवाद" के सप्तम अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद | पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है |
पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर **"राजभाषा हिंदी: स्वरुप, स्थिति और महत्व"**, **"ग्रामीण किसान की व्यथा-संघर्ष से सम्मान तक"** एवं **"शिक्षा का बोझ"** सारगर्भित एवं सराहनीय हैं| पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rajesh Kumar Swyambhu
Date: 28-10-2025
09:56:23
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

सं. प्र.मले. (लेप4)/हिं.अनु./प्रश.पत्र/14-02/2025-26/31 दि.: 13-11-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना),
नई दिल्ली

महोदया,

विषय- हिन्दी पत्रिका "संवाद" के सप्तम अंक पर अभिमत।

आपके कार्यालय से प्रकाशित अर्ध वार्षिक हिंदी पत्रिका "संवाद" के सप्तम अंक की प्रति सादर प्राप्त हुई। धन्यवाद। राजभाषा हिन्दी के विकास यात्रा में पत्रिका के माध्यम से किसी की भावना एवं विचारों को शब्दों की माला में पिरोकर दूसरों तक पहुँचाने का प्रयास सच में प्रशंसनीय है। पत्रिका का यह अंक उच्चकोटि की है और संकलित सभी रचनाएं पठनीय, स्तरीय एवं संग्रहणीय हैं। रचनाएं -'मेरा वो नमन शहीदे आजम भगतसिंह को..', 'कार्यालय और पर्यावरण जागरूकता, 'राम नाम अति भाए, 'मेरी बेटी मेरा स्वाबिमान', नैतिक मूल्यों का पतन'आदि अत्यंत सराहनीय हैं। पत्रिका मे छपे छायाचित्रों से आपके कार्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों की जानकारी मिलती है। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की कामना के साथ पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद!!

भवदीया,

13/11
पिबी टी. मांजूरान
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री राजा ओमर
लेखापरीक्षक

वृन्दावन और गोवर्धन की तीर्थ यात्रा

वृन्दावन और गोवर्धन–ये दो पवित्र नाम किसी परिचय के मोहताज नहीं। यह वह ब्रजभूमि है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अपने चरण कमलों से धरा को स्पर्श करके इसे दिव्य बना दिया। यही वह भूमि है जहाँ रस की अमृतधारा बहती रही, जहाँ राधा–कृष्ण का अलौकिक प्रेम आज भी वायु में घुला हुआ है। वृन्दावन, बांके बिहारी जी की मधुर मुस्कान, प्रेम मंदिर की छटा, निधिवन के रहस्य और रासलीला की अनंत ऊर्जा से ओत प्रोत है। जैसे किसी कार्य की शुरुआत के लिए एक योजना की ज़रूरत पड़ती है, ठीक उसी प्रकार हमारी यात्रा की शुरुआत सर्वप्रथम श्री अमित कुमार जो कि एक सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी हैं के दिमाग से होती है, वह अपनी यात्रा के बारे में श्री सौरव कुमार, श्री नवीन कुमार और मुझे बताते हैं और हम सबकी हाँ के बाद यात्रा अमूर्त्य से मूर्त रूप में आना शुरू होती है।

श्री अमित कुमार न केवल एक कर्मठ अधिकारी हैं, बल्कि एक श्रीकृष्ण भक्त भी हैं। उनके कार्य और भक्ति–दोनों में उनकी निष्ठा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। श्री नवीन एक लेखापरीक्षक है, जिनका शांत स्वभाव और धार्मिक ग्रंथों की तरफ उनकी पढ़ने की निष्ठा अनन्य है। श्री सौरव कुमार भी एक लेखापरीक्षक हैं और साथ ही साथ वह एक पाक कला पारखी भी हैं। मेरे साथियों विशेषकर नवीन जी का फोटो लेने के प्रति रुझान

देख के, वृन्दावन में मैंने बस हास्य के लिए एक वैचारिक संस्था इस्पकोन इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर फोटो कॉन्शस बनाई और जब भी हमें कोई फोटो लेता मिलता है तो हम आपस में कहते हैं, ओह! एक और इस्पकोन का मेम्बर मिल गया।

श्री अमित जी ने हमारी यात्रा के प्रत्येक चरण की अत्यंत सूक्ष्मता और उत्कृष्ट ढंग से योजना बनाई थी उनकी प्लानिंग को मैं कंप्यूटर कोडिंग में डिजाईन होने वाले 'सूडो कोड' से तुलना कर सकता हूँ। वृन्दावन, मथुरा, गोवर्धन, बरसाना, इत्यादि आस–पास के तीर्थ स्थल दिल्ली के काफी करीब, 150 से 200 किलोमीटर की दूरी पर हैं इसलिए इन तीर्थ स्थानों में वीकेंड्स में काफी भीड़ देखी जा सकती है। इस बिंदु का ध्यान रखते हुए उन्होंने हमारी यात्रा की रूपरेखा वीकेंड से पहले की रखी थी और वीकेंड में हमें वापस आना था और हाँ, एक बात बताना तो मैं भूल ही गया जो मुझे शुरुआत में बता देनी चाहिए थी कि श्री अमित कुमार जी को मैं अक्सर "अमित प्रभु" के नाम से पुकारता हूँ –

इस यात्रा में जाने के लिए हमने ताज एक्सप्रेस में टिकट्स बुक कर रखी थी, अमित प्रभु ने यात्रा की शुरुआत के पहले ही यात्रा के लिए ज़रुरी हर मूलभूत सामान की एक सूची हमारे साथ साझा कर रखी थी। पूरी यात्रा के दौरान हमने अनुभव किया कि सूची से अतिरिक्त किसी भी सामान की हमें जरुरत नहीं पड़ी। इस पूरी यात्रा में जो सबसे ज़्यादा ज़रुरी चीज़ थी वो थी जपमाला।

पूरी यात्रा के दौरान हमारा अधिकतर वार्तालाप या तो यात्रा के तीर्थ स्थानों को लेकर था या हम जप कर रहे थे। अमित प्रभु की कोशिश थी कि हम 'मनसा वाचा कर्मणा' से भक्ति की तरफ अग्रसर हों और पूरी यात्रा एक तीर्थ यात्रा की तरह लगे।

'मनसा वाचा कर्मणा' का अर्थ है – मन (विचार), वचन (वाणी) और कर्म (कार्य) से। यह सनातन धर्म का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो इंसानियत के उच्च नैतिक आचरण को दर्शाता है। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य को अपने मन, वाणी और कर्म में पूरी तरह से पवित्रता और सामंजस्य (एकता) रखना चाहिए, अर्थात जो सोचें, वही बोलें और वही करें।

मनसा वाचा कर्मणा के वाचा को हमने जप से, कर्मणा को परिक्रमा से और मनसा को मन में भक्ति की भावना लाके, इस भावना को अपने अन्दर समाहित करने की कोशिश की।

ताज एक्सप्रेस प्रातः 06:55 पर नई दिल्ली से प्रस्थान करती है और प्रातः 08.35 को मथुरा पहुंचती है। यह अपने सामान्य समय से काफी देरी से मथुरा पहुंची। वहाँ से हम सभी एक ऑटो से श्री गोवर्धन धाम पहुंचे। वहां पर यात्रा के शुरू होने के पहले ही केशव निधि सेवा आश्रम गोवर्धन मथुरा में हमारे लिए कमरा बुक था। हमने उसी आश्रम में पहुंचने के बाद आराम किया और विश्राम करने के पश्चात हमने इसी आश्रम में भोजन किया और श्री गिरिराज महाराज की परिक्रमा के लिए निकल पड़े।

मानसी गंगा को गोवर्धन परिक्रमा का पारंपरिक और आध्यात्मिक प्रारंभिक बिंदु माना जाता है।

परिक्रमा की शुरुआत के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण तथ्यः

- मानसी गंगाः परंपरा के अनुसार, श्रद्धालु सबसे पहले मानसी गंगा के पवित्र जल में स्नान करते हैं और फिर परिक्रमा शुरू करते हैं। यह माना जाता है कि यहाँ स्नान करने से मन और आत्मा शुद्ध हो जाती है।

माँ मानसी गंगा मंदिर में दर्शन के बाद हमारी परिक्रमा शुरू हो जाती है और हमारी कोशिश थी कि हम यात्रा के दौरान पड़ने वाले हर मुख्य तीर्थ स्थान के दर्शन करें और वहां की महिमा को समझें। गिरिराज भगवान (गोवर्धन पर्वत) की परिक्रमा मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित है, जिसे कुल मिलाकर 21 किलोमीटर की परिक्रमा कहा जाता है।

- इसके दो मुख्य भाग इस प्रकार हैं

1. बड़ी परिक्रमाः यह लगभग 12 किलोमीटर लंबी है। इसकी शुरुआत आमतौर पर

गोवर्धन के दानघाटी मंदिर से होती है और यह आन्यौर गाँव होते हुए पुछरी का लौठा तक जाती है।

2. छोटी परिक्रमा: यह लगभग 9 किलोमीटर लंबी है। इस भाग में सबसे प्रमुख पड़ाव राधा कुंड और श्याम कुंड हैं।

महत्वपूर्ण जानकारी:

- कुल दूरी: पूरी परिक्रमा 21 किलोमीटर की है, जिसे पूरा करने में पैदल चलने पर सामान्यत: 5 से 7 घंटे लगते हैं।
- शुरुआत और समाप्ति: अधिकांश श्रद्धालु दानघाटी मंदिर से परिक्रमा शुरू करते हैं और वहीं समाप्त करते हैं, पर हमने माँ मानसी गंगा से ही परिक्रमा को प्रारम्भ और अंत किया। पहले हमने बड़ी परिक्रमा पूरी की। फिर अगले दिन हमने छोटी परिक्रमा पूरी की। परिक्रमा के दौरान हमने वेंडर्स देखे जो कि गौ माता के लिए हरी घास और बन्दर को खिलाने के लिए केले बेच रहे थे।

गिरिराज जी की बड़ी परिक्रमा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा राजस्थान राज्य में पड़ता है।

इसके बारे में मुख्य विवरण यहाँ दिए गए हैं:

- पूंछरी का लौठा: बड़ी परिक्रमा के मार्ग में स्थित यह प्रसिद्ध स्थान राजस्थान के भरतपुर जिले के अंतर्गत आता है।
- महत्व: धार्मिक मान्यता के अनुसार, जब तक श्रद्धालु पूंछरी का लौठा बाबा के दर्शन कर अपनी 'हाजिरी' नहीं लगाते, तब तक गोवर्धन परिक्रमा अधूरी मानी जाती है। इन्हें भगवान कृष्ण का अनन्य मित्र माना जाता है, जो आज भी उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

- सीमा: गोवर्धन पर्वत स्वयं उत्तर प्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित है। परिक्रमा मार्ग का लगभग 1 किलोमीटर का हिस्सा राजस्थान की सीमा के भीतर से होकर गुजरता है।

3. बड़ी परिक्रमा के पूर्ण होने के पश्चात हमने प्रसिद्ध गिरिराज होटल में कचोरियां खाई और पास में ठेले से गोलगप्पे खाए तथा मूंगफली ली और वापस धर्मशाला को आ गए। हमने छोटी परिक्रमा की शुरुआत अगले दिन सुबह ब्रह्ममुहूर्त के ठीक बाद शुरू कर दी जो कि दोपहर की शुरुआत तक खत्म हो गई। इस भाग में सबसे प्रमुख पड़ाव राधा कुंड और श्याम कुंड हैं। यहाँ पर हमने श्री कृष्णा कृपा कटाक्ष स्त्रोत और श्री राधा कृपा कटाक्ष स्त्रोत पढ़े।

यात्रा के दौरान हमने भिन्न–भिन्न मंदिरों के दर्शन किए जो कि कुछ इस प्रकार है–

माँ मानसी गंगा, चकलेश्वर महादेव, हरिदेव जी का मंदिर (दाऊ जी के दर्शन), ब्रह्म कुण्ड, नारद कुंड, लक्ष्मी नारायण मंदिर, दान घाटी मंदिर, राधा रानी जी के चरण, गोपाल जी श्री नाथ जी के चरण, गोविन्द कुंड, नरसिंह मंदिर, पूंछरी का लौठा बाबा के दर्शन, दाऊ जी का मंदिर, मुखार बिंदु मंदिर इत्यादि।

गिरिराज भगवान की परिक्रमा और महत्ता आप इस भजन से जान सकते हैं जिसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार है–

"श्री गिरिराज बास में पाऊँ, ब्रज तज बैकुंठ न जाऊँ"

परिक्रमा पूरी होने के बाद हम वृन्दावन की ओर निकल पड़े। वहां पर हम महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट में रुके। विश्राम करने के बाद हम वृन्दावन की पैदल परिक्रमा के लिए निकल पड़े और केलि कुंज के पास एक मार्ग से हम गुजरे, जहाँ पर पूछने पर पता चला कि ये सभी श्रद्धालु श्री प्रेमानंद महाराज जी के दर्शन के लिए बैठे हुए है। वृन्दावन की परिक्रमा के दौरान हमने निम्नलिखित मंदिरों के दर्शन किए: मदन मोहन मंदिर, गोविन्द देव जी मंदिर, राधा रमण मंदिर, राधा गोकुल नंदा मंदिर, राधा

दामोदर मंदिर, राधा श्याम सुन्दर मंदिर, इस्कॉन कृष्णा बलराम मंदिर, श्री बांके बिहारी मंदिर इत्यादि। वृन्दावन की परिक्रमा के बाद हम मथुरा पहुंचे और श्री कृष्ण जन्म भूमि के दर्शन के बाद हमने वहां पर मथुरा की प्रसिद्ध रबड़ी और इसके अतिरिक्त डोसा और इडली खाया। तत्पश्चात हमने मथुरा स्टेशन की ओर प्रस्थान किया, जहाँ से ट्रेन ले कर हम दिल्ली पहुँचे।

ध्यान देने योग्य कुछ बातें–

1. वृंदावन में तीन दिन से अधिक न रुकने की सलाह एक पारंपरिक दिशानिर्देश है, विशेष रूप से भक्ति योग के अभ्यासकर्ताओं के लिए, जिसका उद्देश्य 'परिचितता से उत्पन्न होने वाली अवमानना' को रोकना है। इसका उद्देश्य पवित्र भूमि के प्रति श्रद्धा बनाए रखना और इसे एक साधारण स्थान के रूप में अभ्यस्त होने के बजाय तीव्र लालसा का स्थान बनाए रखना है।

2. शास्त्रों और वैष्णव परंपरा के अनुसार ब्रजवासियों का अपमान करना या उनसे बहस करना आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत हानिकारक माना जाता है।

3. हिंदू परंपरा में गिरिराज गोवर्धन पर्वत पर चढ़ना वर्जित है क्योंकि इस पर्वत को भगवान कृष्ण के समान ही पूजनीय माना जाता है। इस पर पैर रखने के बजाय, भक्त 21 किलोमीटर की परिक्रमा (आमतौर पर नंगे पैर) करके सम्मान व्यक्त करते हैं और इसे पवित्र और पूजनीय रूप मानते हैं।

4. परंपरा के अनुसार, गोवर्धन पर्वत से लाई गई शिलाओं को ब्रज भूमि क्षेत्र से दूर नहीं ले जाना चाहिए, क्योंकि इन्हें राधा और कृष्ण का सजीव रूप माना जाता है। भक्तों का मानना है कि ये शिलाएं ब्रज के 84 कोस क्षेत्र में ही रहनी चाहिए और इन्हें हटाने से नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं।

श्री मनोज मधुकर कस्तूर
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

समंदर की हर लहर कुछ कहती है

दोस्तों हाल ही में (अगस्त 2025), मुझे ऑडिट के लिए गोवा जाने का मौका मिला था, जो अपने खूबसूरत समुद्र तटों के लिए काफी मशहूर है। उन्हीं समुद्र तटों पर बिताये कुछ पलों में, मैंने ये महसूस किया था कि मानो! किनारे पर आती समंदर की हर लहर मुझसे कुछ कह रही हो। अपने उन्हीं अनुभवों में, उन आती जाती अनगिनत लहरों ने मुझसे जो कुछ भी कहने की कोशिश की, उसी को ही मैंने अपने शब्दों में कुछ इस तरह वर्णित करने की कोशिश भर की है...

"समंदर की हर लहर कुछ कहती है..."

विशाल समंदर की लहरें जब किसी किनारे पर आती हैं,
मानो ऐसा लगता है कि खो जाने से पहले कुछ कहना चाहती हैं,
लहरों भरी इनकी असंख्य पंक्तियां अक्सर बहुत लंबी होती हैं,
जहां एक के बाद एक अनगिनत लहरें अपनी बारी के लिए तैयार रहती हैं,

औरों की तरह, जब मैं भी पहुँचा समंदर के एक किनारे पर,
मैंने सुना तेज हवाओं के बीच, लहरों की एक आवाज़ को उस किनारे पर,
सुनते हुए वक्त कैसे गुज़र रहा था? मुझे पता ही नहीं चल पाया,
लहरों के इस अनंत संवाद में, मैं ऐसा खोया कि बाहर ही नहीं निकल पाया,

सामने से आती हर लहर में मानो एक राज़ सा छुपा था,
सबको मैं यूंही समझ पाता मेरे पास इतना वक्त ही कहां था,
एक लहर शांत भी नहीं होती थी कि दूसरी उसकी जगह आ जाती थी,
निरंतर आती उन लहरों को देख, मेरी सोच भी छोटी पड़ जाती थी,

मैं जब तक वहां खाड़ा रहा, सिर्फ उनको ही देखाता रहा,
लहरों में छुपे भाव को समझने के लिए और अधिक उनमें डूबता रहा,
मानो एक संवाद सा चल पड़ा था मेरे और लहरों के मध्य में,
जहां समंदर की आती हर लहर मुझे ले रही थी अपने सानिध्य में,

लहरों के साथ मेरा ये संवाद बहुत ही अविस्मर्णीय होता जा रहा था,
किनारे पर खड़े हुए भी समंदर की गहराइयों में उतरता जा रहा था,
मानो समंदर की लहर मुझसे हर बार कुछ नया कहती जा रही हो,
तुम थक जाओगे, मुझे समझते–समझते कह कर चिढ़ा रही हो,

जाने का वक्त हो चला था और मैं अभी समझना ही शुरू कर पाया था,
उन पलों में गुज़री अनगिनत लहरों में, सिर्फ कुछ को ही महसूस कर पाया था,
मुझे ऐसे बेचैन होते देख वो लहरें मानो अब मुझ पर हँस रही थीं,
राज़ बड़ा गहरा है, यूं ही नहीं समझ पाओगे मानो ऐसा मुझसे कह रही थीं,

उन लहरों का पत्थरों से टकराकर भी हार न मानना गौर करने लायक है,
कई बार बिखरने पर भी वापिस जोश से लौट के आना गौर करने लायक है,
लहरों और पत्थरों के मध्य छिड़ी निरंतर वर्चस्व की लड़ाई गौर करने लायक है,
वैसे ही जीवन के उतार चढ़ाव में कभी हार ना मानना गौर करने लायक है...।।

श्री मोहित तोमर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दिल्ली से लद्दाख बस की यात्रा

नमस्कार साथियों,

मैं आपके साथ अपना एक और यात्रा–वृत्तांत साझा करने जा रहा हूँ। ये यात्रा कुछ खास है और रोचक भी। लद्दाख में प्रतिवर्ष सितंबर माह के दूसरे सप्ताह में लद्दाख मैराथॉन नामक इवेंट आयोजित किया जाता है, जिसमें देश और दुनिया भर से लोग हिस्सा लेने आते हैं। मैंने भी लद्दाख मैराथॉन में हाफ मैराथॉन के लिए पंजीकरण कराया तथा लद्दाख जाने की योजना पर कार्य किया।

दिल्ली से लद्दाख जाने के लिए तीन से चार विकल्प उपलब्ध थे, जिसमें से सबसे आसान था सीधे फ्लाइट लेकर लद्दाख पहुँच जाओ। इसके अतिरिक्त, दिल्ली से श्रीनगर फ्लाइट और वहाँ से सड़क यात्रा टैक्सी के माध्यम से की जा सकती है। फिर मैंने अन्य विकल्प के बारे में सोचा तो पता चला कि दिल्ली से लद्दाख के लिए सीधे बस सेवा जारी है जोकि हिमाचल सड़क परिवहन निगम द्वारा अप्रैल से सितंबर माह तक चलाई जाती है। इस बस यात्रा के बारे में मुझे यूट्यूब के माध्यम से पता चल पाया। जिसके उपरांत मैंने इस बस यात्रा के बारे में और अधिक जानकारी एकत्र करना आरंभ किया। इस पूरी यात्रा को नॉन स्टॉप 32 घंटों में पूरा

किया जाता है, हालांकि बस, खाने पीने तथा नित्य कर्म हेतु बीच–बीच में रुकते हुए चलती है।

दिल्ली से लेह जाने वाली इस बस का संचालन हिमाचल सड़क परिवहन निगम द्वारा गर्मी के मौसम में किया जाता है। इस बस का रूट दिल्ली–चंडीगढ़–हिमाचल–केलांग–लेह रहता है। चूंकि सर्दी के मौसम में बर्फ पड़ती है इसलिए रास्ते अधिकतर समय परिवहन हेतु बंद रहते हैं। मैंने लद्दाख मैराथॉन के लिए पंजीकरण पहले से कर लिया था। अब बस जाने का प्रबंध करना था। मैंने ऑनलाइन माध्यम से इस बस यात्रा का टिकट बुक कर लिया और कार्यालय में अवकाश हेतु आवेदन प्रस्तुत कर दिया।

अब समय आ गया था, दिन था शनिवार 31 अगस्त 2024 और बस का निकलने का निर्धारित समय था दिन में 11 बजकर 45 मिनट। मैं निर्धारित समय से 1 घंटा पहले ही दिल्ली के कश्मीरी गेट अंतरराज्यीय बस अड्डे पर पहुँच कर बस के चलने की प्रतीक्षा करने लगा। यहीं से मेरे जीवन की आज तक की सबसे लंबी नॉन स्टॉप बस यात्रा शुरू जो होने वाली थी और हाँ एक बात तो मैं बताना ही भूल गया कि ये बस हिमाचल सड़क परिवहन निगम की साधारण बस थी, जिसमें वातानुकूलन की सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

धीरे–धीरे साथ वाले यात्री भी आना आरंभ हो गए और बार–बार सभी पूछताछ काउन्टर पर जाकर पूछने लगे। फिर 11 बजकर 30 मिनट पर हिमाचल सड़क परिवहन की बस अपने निर्धारित स्थान पर खड़ी हो जाती है और यात्री अपना टिकट दिखा कर बैठना आरंभ कर देते हैं। बस अपने निर्धारित समय पर कश्मीरी गेट बस अड्डे से प्रस्थान करती है तथापि बस में बहुत सारी सीट खाली थी जिनकी बुकिंग आगे आने वाले स्थानों से थी।

इस क्रम में बस शाम को 5 बजे के आसपास चंडीगढ़ पहुच जाती है। इस बीच

बस

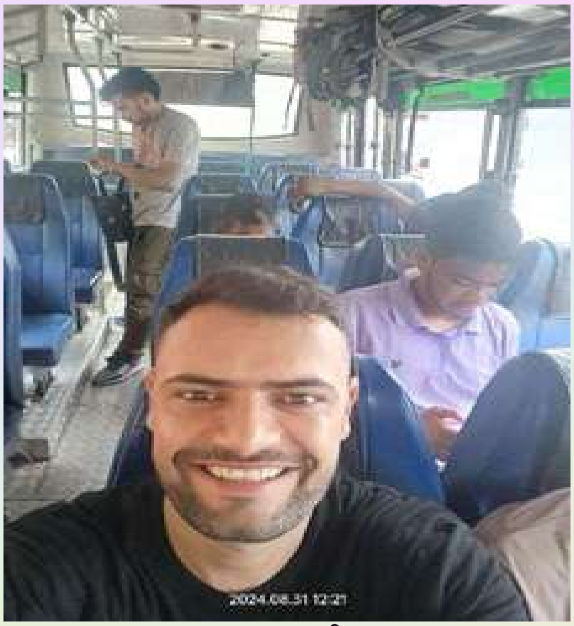

सहयात्री

एक किस्सा आपसे साझा करना भूल गया। इसी बस में एक यूटयूबर भी दिल्ली से व्लॉग बनाने हेतु यात्रा कर रहे थे। पर वो 1 घंटे बाद ही उतर गए और अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पाए, नहीं तो उनके व्लॉग में मैं भी सम्मिलित हो ही जाता। फिर मैंने अपने बगल वाले यात्री से बातचीत आरंभ की, क्योंकि इतनी लंबी यात्रा ऐसे तो पूरी नहीं हो पाती।

मेरे बगल वाले यात्री श्री चेतन जोकि एक प्राइवेट कंपनी में कार्यरत थे, ने छुट्टी लेके इस बस से यात्रा करने का निर्णय लिया था और उन्होंने आगे कोई भी योजना नहीं बनाई थी। न ही उनके रहने का प्रबंध था और न ही वापसी की कोई योजना। मैंने सोचा ये भी ठीक है। ज़्यादा योजना बना लेना भी कई बार हानिकारक होता है, तो जीवन में कई बार बिना योजनाओं और प्रतिक्रियाओं के आगे बढ़ना चाहिए।

उसी दिन शाम 05 बजे चंडीगढ़ पहुंचने के उपरांत सभी यात्रीगण अपने पैर सीधे करने और थोड़ा सामान खरीदने बस अड्डे जाते हैं। वहाँ पर मैंने पानी की बोतल का दाम पता किया तो बिसलेरी की 1 लीटर की बोतल पर लिखित मूल्य ही रु 30 था। मुझे समझ नहीं आया तो मैंने दूसरी बोतल खरीद कर आगे की यात्रा पर ध्यान देना उचित समझा।

चूंकि रास्ते में पड़ने वाले कुछ स्थानों से जुड़ी कहानी मैं अपने पिछले लद्दाख यात्रा वाले लेख में बता चुका हूँ, अतः इस लेख में अपनी इस बस यात्रा में हुई घटनाओं एवं अनुभवों को साझा करूंगा। चंडीगढ़ से निकलने के बाद बस हिमाचल प्रदेश में प्रवेश करती है और यहाँ पहुँचने तक बस लगभग भर गई थी। रात्रिभोजन के लिए हिमाचल प्रदेश के सुंदर नगर में एक ढाबे पर बस रुकती है और सब यात्री रात्रिभोजन अर्थात डिनर करते हैं।

इसी दौरान मैं देखता हूँ कि जो ड्राइवर साहब दिल्ली से बस लेकर आए थे वो वहीं उतर जाते हैं और तीन नए ड्राइवर रात्रि में बस चलाने के लिए बस में बैठ जाते हैं। चूंकि ये पहाड़ी रास्ता था और पूरी रात बस को चलाना था इसलिए हिमाचल सड़क परिवहन निगम द्वारा यह अच्छा नियम बनाया है कि रात्रि के समय तीन ड्राइवर बस में उपस्थित रहेंगे और बारी–बारी से बस चलाएंगे। सभी यात्रियों को थोड़ी देर में नींद आने लगती है और फिर आँख खुलती है कुल्लू में तकरीबन रात के 11:45 पर। मैंने बस कहानियों और वीडियो में ही कुल्लू के बारे में सुना और देखा था।

जैसे ही बस कुल्लू रुकती है तो सवारियाँ आकर अपनी सीट में बैठने लगती है। कुछ सवारी कन्डक्टर साहब से बस में चढ़ने का अनुरोध करते हैं परंतु सीट उपलब्ध न होने के कारण वो उन्हें मना कर देते हैं। पहाड़ी रास्ते में शायद सीमा से अधिक सवारी बैठाना उचित भी नहीं होता है। फिर बस आगे बढ़ जाती है और मेरी गर्दन और शरीर के अन्य अंगों में दर्द शुरू हो जाता है और मैं बैठे–बैठे अपनी जगह बदल कर सोने का प्रयत्न करने लगा। हालांकि इसका सकारात्मक परिणाम नहीं हुआ परंतु शरीर थक गया था, तो कुछ देर बाद मैं सो गया।

रात्रि की यात्रा

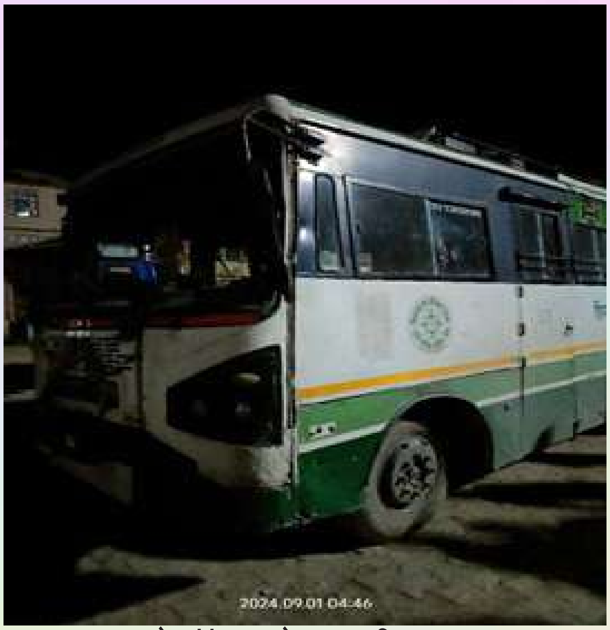

केलॉन्ग से दूसरी बस

फिर आँख खुलती है मनाली में, रात के दो बजकर 20 मिनट का समय था। वहाँ बहुत सारी सवारी बस की प्रतीक्षा में थी, परंतु बस पहले से भरी थी और दो ही सवारी उसमे बैठ पाई। एक महिला सवारी भी वहां उपस्थित थी जोकि अकेली थी और मनाली बस स्टेशन के कार्मिक उनकी सुरक्षा हेतु रुके थे। मनाली बस स्टेशन के कार्मिक के कहने पर उन महिला यात्री को बस में एक खाली सीट पर बैठा दिया गया परंतु उनकी उनके साथ वाले यात्री से बहस हो गई और बाद में कन्डक्टर से भी कहासुनी हो गई। बाद में वो महिला बस से ही उतर गई क्योंकि वो निर्धारित किराया नहीं देना चाह रही थी। वहाँ से लेह और केलॉन्ग जाने के लिए हालांकि टैक्सी उपलब्ध थी पर वो लेह तक रुपए 3000 प्रति सवारी ले रहे थे। कुछ समय तक मुझे उन महिला यात्री की सुरक्षा की चिंता रही फिर मैंने सोचा कि जब उनको बस में सीट न होने पर भी सीट उपलब्ध कराई गई पर उन्होंने उस बात का अनादर तो किया ही और पूरा किराया देने से भी मना कर दिया तो उनको उनके हाल पर छोड़ते हुए बस के साथ मैं भी आगे बढ़ गया। पर मुझे आज भी वो घटना याद आ जाती है तो मैं यही सोचता हूँ कि नियति हमें कोई सही राह दिखाए तो बिना प्रतिक्रिया उसपर आगे बढ़ जाना चाहिए।

फिर सुबह हो जाती है और सुबह 4 बजे हम पहुँच जाते है केलॉन्ग। केलॉन्ग हिमाचल प्रदेश में अटल टनल पार करने के बाद बहुत ही सुंदर जगह है। वहाँ पर हिमाचल सड़क परिवहन की दूसरी बस पहले से ही हमारी प्रतीक्षा कर रही होती है और कोई परेशानी न हो इसलिए जो सीट नंबर पिछली बस में था उसी सीट नंबर पर इस बस में बैठना था। मैं अवसर मिलते ही दूसरी बस में सामान रखकर नित्यकर्म के लिए जाता हूँ। सर्दी अब तक बहुत बढ़ जाती है और मैं वापिस आकर बस में बैठ जाता हूँ।

चूंकि सर्दी बढ़ती जा रही थी तो बस के ड्राइवर साहब हर दो घंटे में बस रोक देते थे। 8 बजकर 30 मिनट पर बस एक ढाबे पर रुकती है और हम सब लोग परांठे खाकर कुछ देर टहलते हैं। धीरे–धीरे ऊंचाई बढ़ती जा रही थी तो कुछ लोगों को उल्टी और सर चकराना जैसी दिक्कतें होना शुरू हो गई थी।

रास्ते के कुछ दृश्य

रास्ते के कुछ दृश्य

बस फिर से आगे बढ़ जाती है और 12 बजकर 40 मिनट पर दोपहर के भोजन के लिए रुकती है। वहीं पर बस का स्टॉफ गाड़ी में डीजल भरता है। भोजन में राज़मा चावल, परांठे और पहाड़ों वाली मैगी थी। मैंने राजमा चावल खाकर टहलना शुरू किया तो वहां केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के कार्मिक भी मिले। उन्होंने भी बताया कि उनका स्थानांतरण हो गया है और वो स्थानांतरण हेतु आवश्यक कार्रवाई के लिए जा रहें है।

चूंकि सितंबर माह में हवाई यात्रा हेतु टिकट बहुत महंगे थे तो उन्होंने बस का विकल्प ही उचित समझा। उनकी आँखों में चमक और चेहरे पर खुशी के भाव थे। जिनको मैं समझ पा रहा था क्योंकि मैंने भी तीन साल कश्मीर कार्यालय में कार्य किया है और घर से दूर रहकर नौकरी करना हिम्मत वाला काम है और अगर लोकेशन लेह जैसी है तो और भी। उन्होंने यही बताया कि जब तक वो यहाँ रहे तो हमेशा सकारात्मक रहे कि जल्दी स्थानांतरण होगा और अंततः उनके जीवन में वो पल आया।

इस वार्ता के उपरांत आगे बढ़ते हुए मैंने अद्‌भुत नज़ारे देखे। इसके अतिरिक्त, ये रास्ता बाइकर समूह का भी मनपसंद रास्ता है और उनके बहुत सारे समूह पूरी यात्रा के दौरान भी दिखाई देते गए जोकि मध्यकालीन समय के कारवां की याद दिलाते हैं। उन सभी का मन प्रसन्न ही होता चला गया कि इस यात्रा में हम अकेले नहीं है। गंतव्य पर पहुँचने की उत्सुकता में अब इस लम्बे सफर की थकान भी चली गई थी, चूंकि अब समय हो गया था 3 बजकर 30 मिनट और बस पहुँच गई थी तगलांगला पास जोकि 17482 फीट की ऊंचाई पर था और हल्की बारिश के साथ बर्फ भी पड़ रही थी। वहाँ बस रुकी और सबने फोटो खिंचाने शुरू किए, मज़ा ही आ गया। हवाई यात्रा में ये आनंद नहीं मिल पाता।

बाएं – चेतन तथा बीच में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के कार्मिक

तगलांगला पास

तगलांगला पास से आगे बढ़ने पर उत्साह और बढ़ता जा रहा था चूंकि लेह अब 2 घंटे और 40 मिनट में पहुंचने वाले थे। फिर मैंने सोचा कि मंजिल पर पहुँच के तो आगे की योजना शुरू हो जाएगी तो क्यों न वर्तमान में रहा जाए। फिर मैंने अपना ध्यान यात्रा पर केंद्रित किया और हर एक क्षण मेरी आँखों के सामने आ रहे वो सुंदर नज़ारें मैं कैद कर लेना चाह रहा था। इन दृश्यों को देख कर आप भी मेरे रोमांच का आंशिक अनुभव कर ही सकते हैं।

रास्ते के कुछ दृश्य

रास्ते के कुछ दृश्य

ये बस यात्रा मेरे जीवन में सदैव अनोखी रहेगी क्योंकि मैंने अपने शरीर की क्षमता का परीक्षण किया और पाया कि मैं भविष्य में भी इस प्रकार की यात्रा कर सकता हूँ और अब वापिस आते हैं यात्रा के अंतिम पड़ाव पर। समय हो जाता है शाम के 6 बजे और हम पहुँच जाते हैं लेह सिटी। वहाँ पहुंचकर मैंने देखा कि लोगों की भीड़ दिल्ली मार्च के लिए पैदल निकल रही थी जिसमें श्री सोनम वांगचुक भी थे। लेह बस स्टेशन पहुँच कर मैं होमस्टे के संचालक से बात करता हूँ और वो रॉयल एनफील्ड हिमालयन पर मुझे लेने आते हैं और यात्रा पूर्ण हो जाती है।

आशा है आपको ये यात्रा वृत्तांत पसंद आया होगा और आप इससे प्रेरणा लेकर स्वयं इस यात्रा का अनुभव करने के लिए भविष्य में इसकी योजना बनाने के बारे में विचार कर सकते हैं।

धन्यवाद।

सुश्री पूनम शर्मा
सहायक निदेशक

अपनी भाषा अपना मान

एक समय की बात है। भारत सरकार के एक प्रतिष्ठित मंत्रालय में रवि नामक एक युवा अधिकारी की नियुक्ति हुई। रवि प्रतिभाशाली, ऊर्जावान और महत्वाकांक्षी था। उसने अपनी पूरी शिक्षा अंग्रेज़ी माध्यम से प्राप्त की थी, इसलिए उसकी अंग्रेज़ी पर असाधारण पकड़ थी। अंग्रेज़ी भाषा के प्रति उसका झुकाव इतना गहरा था कि वह यह मान बैठा था कि सरकारी कार्यों की गरिमा और पेशेवर छवि केवल अंग्रेज़ी में ही संभव है। उसके लिए अंग्रेज़ी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि आधुनिकता, दक्षता और उच्च पेशेवर मानकों का प्रतीक बन चुकी थी।

रवि को लगता था कि हिंदी में कार्य करना कार्यालय की कार्यसंस्कृति को कहीं न कहीं पिछड़ेपन की ओर ले जाता है। जब भी फाइलों, पत्रों या नोटशीट में हिंदी का प्रयोग होता, वह अनायास ही उसे कम प्रभावशाली और कम औपचारिक समझ बैठता। उसकी सोच में यह धारणा गहराई तक बैठ चुकी थी कि अंग्रेज़ी ही प्रगति और पेशेवर उत्कृष्टता का माध्यम है। किन्तु उसे यह ज्ञात नहीं था कि समय और अनुभव शीघ्र ही उसकी इस धारणा को एक नई दिशा देने वाले थे।

पहली चुनौती

एक दिन विभाग के निदेशक, मिस्टर खन्ना ने रवि को अपने कक्ष में बुलाया। उन्होंने गंभीर किंतु उत्साहवर्धक स्वर में रवि को एक फाइल सौंपते हुए कहा, "रवि, अगले सप्ताह 'हिंदी पखवाड़ा' प्रारम्भ हो रहा है। इस अवसर पर हमें राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन पर एक विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करनी है। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों के विकास और वहाँ हिंदी के प्रोत्साहन हेतु कुछ नवीन नीतियों का मसौदा भी हिंदी में तैयार करना होगा।"

रवि ने हल्की झिझक के साथ विनम्र स्वर में कहा, "सर, क्या मुझे इसे पहले अंग्रेज़ी में तैयार करने की अनुमति मिल सकती है, ताकि बाद में उसका सटीक और प्रभावी हिंदी अनुवाद कराया जा सके? हिंदी में सीधे लिखने में अपेक्षाकृत अधिक समय लग सकता है और संभव है कि विचारों की स्पष्टता भी उतनी सहजता से अभिव्यक्त न हो पाए। व्यक्तिगत रूप से भी मुझे अपने विचारों और भावों को अंग्रेज़ी में अधिक स्वाभाविक एवं सुसंगत रूप से प्रस्तुत करने में सहजता का अनुभव होता है।

हिंदी में वही भाव एवं अभिप्राय व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्दों का चयन करना अपेक्षाकृत चुनौतीपूर्ण प्रतीत होता है, जिससे अभिव्यक्ति की प्रभावशीलता प्रभावित हो सकती है।"

एक नया दृष्टिकोण

मिस्टर खन्ना मुस्कुराए और उन्होंने रवि को खिड़की के पास बुलाया और खिड़की से बाहर देखने को कहा, बाहर बहुत सारे लोग अपनी समस्याओं के आवेदन लेकर खड़े थे। खन्ना जी ने कहा, "रवि, तुम जिन फाइलों पर काम करते

हो, उनका सीधा असर उन लोगों पर पड़ता है जो बाहर खड़े हैं। अगर हम अपनी नीतियां और नियम उस भाषा में नहीं लिखेंगे, जिसे वे समझते हों, तो हमारे काम का क्या लाभ और यदि हमें अपने देशवासियों से बात करने के लिए, उन तक अपनी बात पहुंचाने के लिए विदेशी भाषा का ही सहारा लेना पड़े तो हमारी इतनी वैज्ञानिक, इतनी विकसित भाषा का क्या फायदा जो विश्वभर में बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरा स्थान रखती है"। जिस भाषा की वैश्विक प्रतिष्ठा का आलम यह है कि गूगल और विकिपीडिया जैसी विश्व की अग्रणी संस्थाएँ उसे न केवल मान्यता दे रही हैं, बल्कि उसके संवर्धन और प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, उसी भाषा के प्रति इस देश के कुछ नागरिकों का संकोच और संशय निःसंदेह अत्यंत खेदजनक एवं विडंबनापूर्ण प्रतीत होता है।

यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि जो भाषा हमारी संस्कृति, संवेदना और आत्मीयता की सशक्त वाहक है, उसी के बारे में यह भ्रम पाल लिया गया है कि "हिंदी में कौन समझेगा", "हिंदी में बात प्रभावशाली नहीं होगी" या "हिंदी में वह अभिव्यक्ति संभव नहीं है।" वस्तुतः हिंदी केवल संवाद का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी पहचान, हमारी भावनाओं और हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का जीवंत प्रतीक है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने ही भाषाई वैभव पर विश्वास रखें और गर्व के साथ हिंदी को व्यवहार एवं अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाएं। राजभाषा केवल संविधान में अंकित कोई औपचारिक प्रावधान नहीं है, बल्कि यह शासन और जनता के बीच सजीव संवाद का सशक्त सेतु है। जब प्रशासन अपनी ही भाषा में जनता से संवाद करता है, तो उसमें स्वाभाविक आत्मीयता, पारदर्शिता और संवेदनशीलता झलकती है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि विश्वास और सहभागिता की आधारशिला होती है।"

यदि हम वस्तुस्थिति पर दृष्टि डालें तो यह और भी विचारणीय हो जाता है।

हमारे देश की कुल आबादी लगभग 145 करोड़ है, जिसमें से लगभग 45–46 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा हिंदी है, अर्थात लगभग 65 करोड़ नागरिक हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति का स्वाभाविक माध्यम मानते हैं। ऐसे विशाल राष्ट्र में यदि प्रशासनिक कार्य उस भाषा में किया जाए, जिसे बोलने और समझने वालों की संख्या कुल जनसंख्या का मात्र 0.02 प्रतिशत, अर्थात लगभग 2 लाख 70 हजार हो, तो यह न केवल व्यावहारिक दृष्टि से असंगत प्रतीत होता है, बल्कि प्रशासन और जनता के मध्य अनावश्यक दूरी भी उत्पन्न करता है। अतः यह आवश्यक है कि प्रशासनिक कार्यप्रणाली ऐसी भाषा में संचालित हो, जो जनसामान्य की समझ, सहभागिता और विश्वास को सुदृढ़ करे, क्योंकि सशक्त राष्ट्र वही होता है जहाँ शासन की भाषा और जनता की भाषा के बीच कोई दूरी न हो।

बदलाव की शुरूआत

रवि को बात समझ आ गई। उसने उस रात घर जाकर हिंदी के शब्दकोश और पुराने दस्तावेज़ों को पढ़ना शुरू किया। उसने पाया कि हिंदी में भी तकनीकी विषयों को व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। निस्संदेह, हिंदी भाषा अपनी वैज्ञानिक संरचना, सुव्यवस्थित व्याकरण तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति की क्षमता के कारण अंग्रेज़ी की तुलना में अधिक सुसंगठित एवं प्रभावशाली भाषा है।

धीरे–धीरे रवि की पहल का असर पूरे विभाग में दिखने लगा। हिंदी सहायता डेस्क केवल औपचारिक व्यवस्था बनकर नहीं रह गई, बल्कि कर्मचारियों के लिए एक भरोसेमंद मंच बन गई। अब कर्मचारी न केवल नोटिंग–ड्राफ्टिंग में सहायता लेने आते थे, बल्कि वे सरकारी नियमों और आदेशों को भी हिंदी में समझने का प्रयास करने लगे। एक दिन कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी ने निरीक्षण के दौरान देखा कि कई फाइलों पर टिप्पणियाँ सरल और स्पष्ट हिंदी में लिखी हुई थीं।

उन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा, "यह परिवर्तन कैसे संभव हुआ?" तब कर्मचारियों ने मुस्कुराते हुए रवि की ओर इशारा किया। रवि ने विनम्रता से बताया कि यह सामूहिक प्रयास का परिणाम है और भाषा तभी फलती–फूलती है, जब उसे व्यवहार में लाया जाए।

रवि ने समय–समय पर लघु कार्यशालाएँ भी आयोजित कीं, जिनमें कर्मचारियों को सरल हिंदी में सरकारी कार्य करने की तकनीक सिखाई जाती थी। इन कार्यशालाओं में कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और अपने अनुभव साझा किए। परिणामस्वरूप कार्यालय का वातावरण अधिक सहयोगात्मक और आत्मीय बन गया। कुछ ही महीनों में विभाग को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशंसा भी प्राप्त हुई। इस उपलब्धि ने कर्मचारियों के मन में हिंदी के प्रति सम्मान और आत्मविश्वास दोनों को और अधिक मजबूत किया। रवि को यह देखकर संतोष हुआ कि उसकी छोटी–सी पहल ने पूरे कार्यालय की कार्यसंस्कृति को सकारात्मक दिशा दे दी।

परिणाम

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में रवि को 'राजभाषा सेवा' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मंच पर पहुँचते ही सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। रवि ने आत्मविश्वास और विनम्रता के साथ अपने विचार व्यक्त करते हुए कहाः

"मैंने यह अनुभव किया है कि भाषा केवल शब्दों का संयोजन नहीं होती, बल्कि वह हमारी पहचान, संस्कार और व्यक्तित्व का दर्पण होती है। राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हमारे लिए कोई बाध्यता नहीं, बल्कि गर्व और सम्मान का विषय होना चाहिए।'' भाषाएँ ज्ञान अर्जित करने का सशक्त माध्यम होती हैं, किंतु मातृभाषा

आत्मसम्मान और आत्मीयता का आधार होती है। जैसे एक परिंदा आकाश की अनंत ऊँचाइयों में कहीं भी उड़ान भर ले, पर अंततः वह अपने घोंसले में लौटकर ही सुकून पाता है उसी प्रकार हम चाहे कितनी भी भाषाएँ सीख लें, हमारे हृदय की शांति, भावनाओं की गहराई और विचारों की सहज अभिव्यक्ति अपनी मातृभाषा में ही संभव होती है।"

सुश्री ऐश्वर्या राय
लेखापरीक्षक

अंधेरों के पार-सत्य की जीत

उत्तर प्रदेश के एक छोटे से कस्बे शिवपुर में राम प्रसाद का परिवार अपनी सादगी, ईमानदारी और भगवान में अटूट विश्वास के लिए जाना जाता था। राम प्रसाद, उनकी पत्नी हेमा, उनकी पुत्री सिया, पुत्र मंगल और पारिवारिक गाय रेवती–यह छोटा परिवार गाँव में नैतिक मूल्यों का प्रतीक माना जाता था। उनके जीवन की धुरी ईमानदारी, विनम्रता और कर्मठता थी। पर हर उजले घर की छाया में कभी–कभी बादल भी आते हैं–उनकी परीक्षा के लिए प्रकृति और इंसान दोनों ही खड़े हो जाते हैं और उस कसौटी का नाम था–दुर्जन प्रसाद, राम प्रसाद का छोटा भाई, जो जलन और स्वार्थ से ग्रस्त था।

शिवपुर की सुबहे शांत और सरल रहती। आँगन में रेवती के कदमों की खनक, घी की रोटी की खुशबू और बच्चे पढ़ते हुए, स्कूल की घंटी–इन सबमें एक अजब सी पवित्रता थी। राम प्रसाद गाँव के ही सरकारी विद्यालय में मिड–डे–मील योजना के तहत रसोइये का कार्य करते थे। धन कम था, पर घर में आत्मिक धन अथाह था। हेमा गृहिणी होने के साथ–साथ परिवार की रक्षा करने वाली स्तम्भ थीं। सिया तेज–तर्रार और दयालु थी उसका मन गाँव की लड़कियों की पढ़ाई के लिए

धड़कता था। मंगल थोडा शांत स्वभाव का, पर पिता के विचारों में दृढ़ विश्वास रखता था।

एक वर्ष विषम मानसून आया। मिड–डे–मील के वितरण में अनियमितता का आरोप विद्यालय पर लगा और निरीक्षण के दौरान कुछ धनराशि गायब पाई गई। दुर्भाग्यवश उस समय प्रधान और गाँव के कुछ ताकतवर लोग मिलकर सारा दोष राम प्रसाद पर थोपने का निर्णय कर चुके थे– जिसमें उसके छोटे भाई दुर्जन का भी हाथ था, जो अपने स्वार्थ के लिए किसी भी हद तक जा सकता था। दुर्जन ने यह मौका पाकर गाँव में अफवाहें फैलाईं, बोल–चाल से लोगों का मन भड़काया और अंततः राम प्रसाद का निलंबन करवा दिया गया। यह उनके परिवार के लिए पहला बड़ा झटका था। हेमा ने दुखी होकर कहा, "क्यों भगवान? हमने तो अपने जीवन में किसी का बुरा नहीं चाहा।"

राम प्रसाद ने आँखें बंद करके कहा, "हेमा, भगवान के घर में न्याय है। यह परीक्षा है–हमारे सिद्धांतों की। हम सत्य के साथ हैं, इसलिए डरने की बात नहीं है।"

राम प्रसाद की आमदनी बंद होने पर घर की सोच बदल गई। इसी बीच रेवती अचानक से बीमार पड़ गई। गाँव के पशु चिकित्सक ने दवा और देखभाल की सलाह दी, पर दवाइयाँ महँगी थीं। हेमा ने बिना विलम्ब किए अपने कुछ आभूषणों को बेचकर दवाई की व्यवस्था की, क्योंकि रेवती सिर्फ गाय नहीं, परिवार की एक सदस्य की तरह थी। यह देख कर दुर्जन तीखी टिप्पणी करता है–"ईमानदारी से पेट नहीं भरता।" पर राम प्रसाद की नज़र में रेवती का प्यार और परिवार की गरिमा कुछ और ही मायने रखती थी।

कभी–कभी धनार्जन की चाहत लोगों को बहुत नीचे गिरा देती है। एक रात

मंदिर से दान–पेटी चोरी हो गई। अगले दिन सुबह असत्य और पूर्वाग्रह की आग फैल गई–कुछ लोगों ने बिना जाँच–पड़ताल के मंगल पर शक जताया। दुर्जन ने माहौल गरम करने के लिए खुलकर आरोप लगाए और पंचायत बुला ली गई। मन में बेचैनी और अपमान था–मंगल मात्र बारह साल का मासूम लड़का था।

राम प्रसाद ने कठोर साँस ली और पंचायत में खड़े होकर कहा, "मेरा बेटा कभी चोरी नहीं करेगा। आप में से जो भी इसको दोषी पाएगा, उसके सामने मैं खुद आकर अपनी गलती स्वीकार करूँगा।" गाँव में कुछ लोग सहमे हुए थे, कुछ सहानुभूति जताने लगे, पर कुछ के मन में जिज्ञासा बनी रही।

सिया, जो परिवार की उम्मीद और घर की बुद्धिमत्ता दोनों थी, ने खुद इस मामले की जाँच शुरू की। उसने अपनी सहेली विद्या के साथ मंदिर और आसपास के रास्तों पर पैरों के निशान, टूटे हुए तार और किसी अजीब वस्तु की तलाश की। नज़दीकी नदी के किनारे एक टूटा हुआ जूता मिला–जिसका डिजाइन बहुत विशिष्ट था। जांच करने पर यह वही जूता निकला जैसा दुर्जन पहनता था। सिया ने शांतिपूर्वक सबूत इकट्ठा करके पंचायत के समक्ष रखा। कारण और सबूतों के सामने दुर्जन का झूठ बोलना मुश्किल हो गया।

दुर्जन ने अंततः अपना अपराध कबूल कर लिया–"मैंने चोरी की और मैंने अपने भाई को बदनाम करने के लिए यह सब किया।" उसकी आँखों में पछतावा और शर्म दोनों बराबर झलक रहे थे। राम प्रसाद का हृदय भरा हुआ था, पर उन्होंने क्रोध नहीं दिखाया। उन्होंने दुर्जन के माथे पर हाथ रखा और कहा, "किसी को बदलना आसान नहीं, पर हमें सदैव सही राह दिखानी चाहिए।" दुर्जन के आँसुओं ने उसके बाद उनके संबंधों को नया मोड़ दिया।

दुर्जन की सच्ची माफी और परिवार की व्यापक सहानुभूति ने घर में फिर से

शांति लौटा तो दी, किंतु राम प्रसाद का निलंबन अभी भी जारी रहा। इस बीच सिया ने अपनत्व और सेवा की भावना से गाँव की लड़कियों के लिए एक छोटी पाठशाला शुरू की। वह पाठशाला किसी लाइसेंस की मोहताज नहीं थी–यह केवल एक आँगन थी, जहाँ जीवन के मूल्य और पढ़ाई दोनों सिखाए जाते। माता–पिता ने धीरे–धीरे विश्वास जताया और बच्चे आने लगे।

सिया की सरलता और समर्पण गाँव में चर्चा का विषय बन गया। अचानक जिला शिक्षा अधिकारी की नज़र उसी पाठशाला पर पड़ी। अधिकारी ने सिया के काम की सराहना की और उसे शहर के बाल शिक्षण केंद्र से जुड़ने का प्रस्ताव दिया। यह अवसर परिवार के लिए आर्थिक राहत और सिया के लिए शिक्षा का नया रास्ता लेकर आया। राम प्रसाद और हेमा थोड़े भावुक हुए–वह कहते हैं, "बहुत दूर जाने का अर्थ है परिवार से दूर होना", पर राम प्रसाद ने समझाया, "जब किसी के पास मौका है, उसे रोकना तो पाप होगा।"

प्रगति के साथ–साथ नई चुनौतियाँ भी आईं। दुर्जन का स्वभाव पहले जैसा नहीं रहा–वह धीरे–धीरे बदलने लगा, पर पुराने घाव थोड़े समय के लिए गहरे थे। एक रात दुर्जन के खेत में आग लग गई–जिससे वह आर्थिक संकट में आ गया। गाँव के कुछ लोग उसे उसके कर्मों का फल बता कर ताना मारने लगे, पर राम प्रसाद ने परिवार सहित जाकर उसकी मदद की–क्योंकि न्याय और दया का संतुलन ही सच्ची मानवता है। दुर्जन की आँखों में शर्म और कृतज्ञता के आँसू थे, जब उसने अपने भाई का हाथ थामा।

उस घटना ने गाँव में एक नया संदेश दिया–बुरे कर्मों के बाद भी सुधार संभव है और क्षमा की ताकत रिश्तों को बचा सकती है। सिया के समर्पण, विनम्रता और लगन ने उसे शहर में सम्मान दिलाया। उसे "सर्वश्रेष्ठ युवा शिक्षिका" का पुरस्कार मिला। समारोह में उसने भाव–विभोर होकर कहा–"हमारे जीवन की कठिनाइयाँ हमें तोड़ने नहीं आतीं, बल्कि हमें सिखाती हैं कि हम किस प्रकार मज़बूत बन सकते

हैं।" राम प्रसाद और पूरा परिवार गर्व से भर उठा। मंगल ने अपनी पढ़ाई में नई रुचि दिखाई और गाँव में वह एक नई सीख की मिसाल बन गया। रेवती, जो घर की शान और प्यार का प्रतीक थी, हमेशा की तरह परिवार के साथ रहती और दूध देने में तल्लीन रहती।

एक दुर्लभ मोड़ पर, गाँव के कुछ प्रभावशाली लोग और ताकतें फिर से राम प्रसाद द्वारा संचालित मूल्यों को चुनौती देने लगे। इस बार आरोप यह था कि राम प्रसाद अपने माहौल से निकलकर दूसरों को औपचारिक मदद के रूप में धोखा दे रहा है—एक आधारहीन आरोप जो उसके ऊपर फेंकने की कोशिश की गई, पर इस बार राम प्रसाद परेशान नहीं हुआ। उसने कहा, "यदि सत्य पर चलने में हमें कोई दुश्मन मिलता है, तो मैं उससे लड़कर नहीं, अपने कर्म से जीतूँगा।" सिया, जो अब न सिर्फ एक शिक्षिका थी बल्कि गाँव की आत्मा बन चुकी थी, ने सबको याद दिलाया कि सत्य और धर्म केवल शब्द नहीं—वो जीवन है।

दुर्जन, जो अब पूरी तरह बदल चुका था, चुपचाप खड़ा रहा। उसने अंततः खुलकर अपने भाई के सामने कहा, "मुझे माफ कर दो, भैया। मैंने जब बहक कर तुम्हें घात पहुँचाया था, तब मुझे नहीं पता था कि सच्चाई और प्रेम की ताकत कितनी बड़ी है। अब मैं तुम्हारे साथ खड़ा हूँ।" समय के साथ राम प्रसाद का सम्मान बढ़ा और उनका परिवार गाँव में नैतिकता का आदर्श बन गया। सिया ने अपनी नौकरी के साथ—साथ दूर—दराज़ के गांवों में भी छोटी—छोटी पाठशालाएँ खोलीं, ताकि और भी लड़कियाँ पढ़ लिख कर आत्मनिर्भर बन सकें। मंगल ने घर आकर अपने पिता के साथ मिलकर छोटे हथकरघे का कारोबार बढ़ाया—उनके बनाए आसन और चौकियाँ अब आस—पास के बाज़ारों में बिकने लगीं। हेमा ने गाँव की महिलाओं को सिलाई—कढ़ाई सिखाकर उनका आर्थिक सशक्तिकरण आरंभ किया।

एक शांत शाम घर की छत पर पूरा परिवार बैठा था—आसमान में हल्की सुनहरी रोशनी थी। रेवती आँगन में लेटी हुई थी और बच्चों के खेल की हँसी गूँज रही थी। दुर्जन भी उनके साथ था और उसके चेहरे पर अब खुशी की झलक थी—ना ईर्ष्या, ना कटुता, केवल शान्ति। राम प्रसाद ने चाँद की ओर देखकर कहा, "बेटों, भगवान कभी किसी सच्चे दिल को अकेला नहीं छोड़ते। कठिनाइयाँ आती हैं ताकि हम अपने भीतर की शक्ति ढूँढ सकें।" हेमा ने भी कहा, "ईमानदारी, विनम्रता और कर्म—यह तीन ऐसी मालाएँ हैं जो जीवन को सुन्दर बनाती हैं। इन्हें पकड़ कर चलने वाला हर इंसान विजय पाता है।"

सिया ने अपने स्वर में नई ऊर्जा के साथ कहा, "बाबा, आज मैंने सीखा कि सत्य सिर्फ सिद्धांत नहीं, कर्म भी है। जब हम अपने परिवार के साथ मिलकर चलेंगे और दूसरों के लिए धर्म कर के दिखाएँगे, तब संसार में सच्ची क्रांति होगी।" अंत में राजसी चुप्पी में गाँव के लोग भी यह मान गए कि राम प्रसाद और उसके परिवार ने न केवल अपने लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए एक मिसाल कायम की है—कि ईमानदारी की डोर चाहे कितनी ही तनी जाए, वह टूटती नहीं वह और मज़बूत हो जाती है और दुर्जन जैसा व्यक्ति जब पलट कर सही राह पर आ जाता है, तो यही समाज की असली जीत है।

यह कहानी हमें याद दिलाती है कि—

- सत्य और ईमानदारी अक्सर कठिनाइयों के बीच परखी जाती हैं, पर वे अंततः विजयी रहती है।
- भगवान लोगों को दंडित नहीं करते वे मार्गदर्शन करते हैं—कभी—कभी कठिनाइयों के रूप में—ताकि हम अपने कर्म सुधार सकें।

- परिवार की एकता, क्षमा की भावना और दूसरों की सहायता ही व्यक्ति को असली मानव बनाते हैं।
- परिवर्तन संभव है—भले ही वह परिवर्तन किसी की गिरावट के बाद ही क्यों न आए।

अंधेरों से गुज़र कर जब सत्य की रोशनी फैली, तो शिवपुर के उस परिवार की कहानी बन गई—एक ऐसी दास्ताँ जो पढ़ने वालों के मन में दीर्घकाल तक उजाला भर देगी।

श्री महेश कुमार
लेखापरीक्षक

आखिरी टिफिन

दिल्ली की कड़ाके की सर्दी, सुबह का समय, बस स्टॉप के पास हल्का–सा कोहरा और लोगों की तेज़ आवाज़ें। लेकिन उन सब के बीच एक चेहरा ऐसा था, जो शोर से भी ज़्यादा चुप लग रहा था– 70 साल की एक बुज़ुर्ग महिला, सीता अम्मा। हर दिन की तरह उनके हाथ में एक पुराना स्टील का टिफिन था, जिसके ढक्कन से हल्की–सी भाप निकल रही थी।

वहीं दूसरी तरफ खड़ा 17 साल का अरुण, स्कूल का बैग लेकर, उन्हें रोज़ देखता था। वो देखता था कि अम्मा रोज़ आती हैं, टिफिन खोलती हैं, दो निवाले खाती है और फिर ऐसे देखती रहती है जैसे किसी का इंतज़ार कर रही हो। उसने कई बार सोचा पूछे, पर हर बार हिचक गया।

लेकिन उस दिन ठंड इतनी थी कि अम्मा के हाथ काँप रहे थे।

अरुण आगे बढ़ा– "अम्मा, आप ठीक हैं?"

अम्मा ने मुस्कुरा कर कहा– "हाँ बेटा, ठीक हूँ। थोड़ी ठंड है बस।"

अरुण ने झिझकते हुए पूछा– "आप रोज़ यहाँ आती हैं... किसी का इंतज़ार करती हैं?"

अम्मा की मुस्कुराहट अचानक ठहरी हुई–सी लगने लगी।

उन्होंने धीरे से कहा– "हाँ बेटा... अपने मोहन का, मेरा बेटा।"

अरुण पास बैठ गया।

"कब आते हैं वो?"

अम्मा की आँखें दूर कहीं देखने लगीं– "पाँच साल हो गए... वो नहीं आया।"

अरुण सन्न रह गया।

"तो फिर आप रोज़ कैसे...?"

अम्मा ने टिफिन खोलकर दो परांठे निकाले।

"उस दिन वो काम पर जा रहा था। मैंने कहा था–टिफिन ले जा। तो बोला–'अम्मा, दोपहर को आपके साथ यहीं खाऊँगा। बस स्टॉप पर इंतज़ार करना।' मैं आई... और वो गया... फिर कभी वापस नहीं आया।" अरुण की आँखें भर आईं। "फिर भी आप रोज़ आती हैं?"

अम्मा ने प्यार से उसकी ओर देखा– "क्यों नहीं? उसने वादा किया था न बेटा?

शायद आज आ जाए... शायद कल... मां का दिल उम्मीद छोड़ना नहीं जानता।"

उस दिन अरुण वहीं बैठ गया। अम्मा ने उसका सिर सहलाया और बोलीं– "आज तुम खा लो मेरे साथ। बहुत दिनों से किसी के साथ नहीं खाया।" उस दिन से ये रोज़ का रिवाज़ बन गया। अरुण स्कूल आते समय 15 मिनट जल्दी निकलता और अम्मा के साथ टिफिन खाता। उनकी बातें सुनता– कैसे मोहन बचपन में शरारत करता था, कैसे पहली कमाई से उसने अम्मा को चप्पल दिलाई

थी, कैसे कहता था– "अम्मा, आप ही मेरी दुनिया हैं।"

अरुण को भी नहीं पता कब अम्मा उसके दिल में अपनी जगह बना गईं। स्कूल में दोस्त पूछते– "कहाँ गायब हो जाता है?" तो वो बस मुस्कुरा देता। कभी–कभी अम्मा उसके लिए आलू–गोभी की सब्ज़ी लातीं, कभी गुड़ वाली रोटी और कहतीं– "मोहन को ये बहुत पसंद थी।" अरुण खाना खाते–खाते चुप हो जाता। उसे लगता जैसे वो उसी बेटे की जगह बैठा है। एक दिन... जनवरी का बेहद ठंडा दिन, अरुण बस स्टॉप पहुँचा, लेकिन अम्मा नहीं थीं। वो देर तक इंतजार करता रहा। दोपहर में फिर गया, शाम को फिर... लेकिन अम्मा कहीं नहीं दिखीं।

अगले दिन उसने चौकीदार से पूछा–"यहाँ एक बूढ़ी अम्मा आती थीं..."

चौकीदार एकदम चुप हो गया। धीरे से बोला– "बेटा... कल रात ठंड ज़्यादा थी। अम्मा... नहीं रहीं।"

अरुण को लगा जैसे उसके पैरों तले से ज़मीन खिसक गई हो। उसकी आँखें फौरन भर आईं।

अम्मा के कमरे से एक चिट्ठी मिली, जिस पर लिखा था– "अरुण बेटा, तुम्हारे साथ टिफिन खाते हुए मुझे ऐसा लगता था, जैसे मेरा मोहन लौट आया हो।

अब मेरे जाने का समय हो गया है। लेकिन तुम अकेले मत खाना। कभी किसी को इंतज़ार में मत छोड़ना... जैसे मैंने किया।" अरुण चिट्ठी सीने से लगाकर रो पड़ा। अरुण ने अम्मा की अंतिम क्रिया करवाई और उसके बाद बस स्टॉप पर उसी जगह एक छोटी–सी पट्टी लगवाई–

"यहाँ एक माँ पाँच साल तक अपने बेटे का इंतज़ार करती रहीं और एक बेटा उन्हें आखिरी दिन तक अकेला नहीं छोड़ पाया।"

लोग वहाँ रुकते, पढ़ते और चुपचाप आगे बढ़ जाते–लेकिन अरुण...हर साल अम्मा की बरसी पर उसी स्टॉप पर टिफिन लेकर बैठता है।

एक बार उसके दोस्त ने पूछा–"किसका इंतज़ार करते हो?"

अरुण मुस्कुराया– "उस माँ का... जिसने मुझे बेटे जैसा प्यार दिया और उस वादे का... जो उसने निभाया नहीं, मगर मुझे निभाना है।"

माँ–बाप वादों से ज़्यादा इंतज़ार पर ज़िंदगी गुज़ार देते हैं उनका प्यार कभी कम नहीं होता, लेकिन हमारा समय अक्सर कम पड़ जाता है। किसी को इंतज़ार में न छोड़ो–क्या पता, वही आपकी ज़िंदगी की आखिरी मुलाकात हो।

श्री फिरोज़ हसन
सहायक पर्यवेक्षक

दिव्यांगजन और व्हीलचेयर टेनिसः अटूट हौसलों की कहानी

दिव्यांगजन जब व्हीलचेयर टेनिस कोर्ट पर उतरते हैं, तो वे सिर्फ खेल नहीं खेलते–वे साहस, आत्मविश्वास और संघर्ष की नई परिभाषा लिखते हैं। यह खेल सिर्फ शारीरिक क्षमता का नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता और अदम्य आत्मविश्वास का प्रतीक है।

1. सीमाएँ नहीं, संभावनाओं की उड़ान

व्हीलचेयर टेनिस इस बात का जीवंत प्रमाण है कि शरीर की सीमाएँ मन की शक्ति को रोक नहीं सकतीं। कई बार समाज दिव्यांगता को कमजोरी मान लेता है, लेकिन खिलाड़ी यह साबित करते हैं कि असली ताकत हिम्मत में होती है। हर सर्व, हर रिटर्न और हर मूवमेंट में एक संदेश छुपा है–

'मैं भी कर सकता हूँ और बहुत बेहतर कर सकता हूँ।'

2. खेल जो बदल देता है जिंदगी

व्हीलचेयर टेनिस खेलने से न सिर्फ शरीर मजबूत होता है बल्कि आत्मसम्मान

भी कई गुना बढ़ता है। यह खेल खिलाड़ियों को आगे बढ़ने, स्वयं को स्वीकार करने और अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखने की प्रेरणा देता है।

- यह फिटनेस बढ़ाता है।
- मन में सकारात्मकता लाता है।
- समाज में सम्मान और पहचान देता है।
- सबसे बड़ी बात, यह खिलाड़ियों को यह अहसास करवाता है कि वे किसी से कम नही–न कौशल में, न सपनों में।

3. मेरा (व्हीलचेयर) टेनिस का सफर।

मुझे बचपन से खेलों के प्रति रुचि रही है, शायद दिव्यांग न होता तो मैं एक फुटबॉलर होता। लेकिन दिव्यांग होने के बावजूद मैं हमेशा अपनी क्षमता के अनुसार खेलों में सक्रिय रहा और क्रिकेट, बैडमिंटन और टेबल टेनिस आदि खेलता रहा। टेबल टेनिस हमेशा से मेरा प्रिय खेल रहा।

लेकिन मेरे खेल के प्रति प्रेम को उड़ान तब मिली जब 2024 में मेरे कार्यालय के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री राजेश रनाल जी जो इंटरनेशनल लेवल पर खेल चुके हैं, ने मुझे व्हीलचेयर टेनिस खेलने के लिए प्रेरित किया। मैंने उनके साथ प्रैक्टिस करने के उपरांत पहले अंतर मंत्रालय व्हीलचेयर टेनिस टूर्नामेंट 2024 में भाग लिया और पहले ही प्रयास में युगल में सिल्वर मेडल प्राप्त किया।

उसके बाद मैंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और 2025 में चेन्नई, बैंगलोर और दिल्ली में आयोजित नेशनल टूर्नामेंट में भाग लिया और 02 बार युगल में क्वार्टर फाइनल तक का सफर तय किया।

मेरी कामयाबी के पीछे श्री राजेश रनाल सर का बहुत योगदान है, जिन्होंने मेरे कोच, मेंटर का रोल अदा किया है।

4. हर मैच एक प्रेरणा

जब व्हीलचेयर टेनिस खिलाड़ी तेज धूप में, कठिन परिस्थितियों में या सीमित अवसरों के बीच भी अपनी पूरी ताकत लगाते हैं, तो वे लाखों लोगों के लिए संदेश छोड़ते हैं–

"अगर हम हार नहीं मानते, तो दुनिया की कोई भी बाधा हमें रोक नहीं सकती।"

उनकी मेहनत बताती है कि असली जीत मेडल में नहीं, बल्कि उस जज़्बे में होती है जो बार–बार गिरकर भी हमें उठना सिखाती है।

5. समाज के लिए संदेश

दिव्यांग खिलाड़ी हमें सिखाते हैं कि सहानुभूति नहीं–समान अवसर और सम्मान चाहिए। वे बताते हैं कि जीवन का असली आनंद सीमाओं को पार करने में है। समाज का भी दायित्व है कि वे ऐसे खिलाड़ियों के लिए बेहतर सुविधाएँ, खेल मैदान और प्रोत्साहन उपलब्ध कराएं ताकि और भी प्रतिभाएँ आगे आएँ। व्हीलचेयर टेनिस दिव्यांगता नहीं, बल्कि अदम्य शक्ति का उत्सव है। जो लोग यह खेल खेलते हैं, वे दुनिया को दिखाते हैं कि सपना वही बड़ा होता है, जिसे पूरा करने की हिम्मत हो। आप ही वह उदाहरण हैं जो दुनिया को नई दिशा दिखा रहे हैं– हिम्मत, संघर्ष और जीत का रास्ता।

श्री प्रशांत ओमर
श्री राजा ओमर, लेखापरीक्षक के भाई

अनुभव

शाम ढल जाती है, तो पक्षी घर को जाया करते हैं
हमारे गांव के खेतों में, जुगनू जगमगाया करते हैं
बीस की उम्र तक, मां–बाप पालते हैं जिनको
ब्याह के बाद, वह परिंदे उड़ जाया करते हैं
शाम ढल जाती है, तो पक्षी.............................

बचपन में वादा किया था भाइयों ने, एक साथ एक रास्ते पर चलेंगे
थोड़े बड़े हुए तो, रास्तों से मुड़ जाया करते हैं
हम बहुत दिन से अपने गांव नहीं गए
जहां गन्ने में लपेटकर गुड़ खाया करते हैं
शाम ढल जाती है, तो पक्षी..........................

अनाथ बच्चों की मां नहीं होती
इसलिए फुटपाथ पर, भूखे सो जाया करते हैं
हम सबसे अपनी हकीकत छुपाते फिरते हैं
महफिल में तो हंसते हैं, अकेले में रो जाया करते हैं
शाम ढल जाती है, तो पक्षी..

मैं आज भी अकेले मेला नहीं जाता
बचपन में मां का हाथ ना पकड़ें, तो खो जाया करते हैं
सर झुकाने से और कुछ नहीं मिलता है ओमर
बस अपनों से बड़ों की दुआएं पाया करते हैं
शाम ढल जाती है, तो पक्षी...............................

सुश्री अन्नू बाजपेयी
कनिष्ठ अनुवादक

प्रेम-वल्ली

मैं मीनाक्षी हूँ मदुरै की,
तुम एलोरा के कैलाशी।
तुम विश्वनाथ से हो मेरे,
मैं शहर तुम्हारा हूँ काशी।।

तुममे अर्णव सी है गुरुता,
मैं उसमें घुलती अपगा सी।
तुम अंबर जैसे हो विशाल,
मैं उसमें तिरती वेगा सी।।

तुम कालिदास के अग्निमित्र,
मैं तुममे मिलती मालविका।
तुम मानस मेरे तुलसी के,
मैं तुमको पढ़ती दीपशिखा।।

मन की माला के मनके से,
गुथते जाते हो जीवन में।
मैं खोती जाती हूँ तुममे,
तुम मिलते जाते हो मुझमें।।

मैं अनु से अनुश्री, अनुश्री अनु से,
तुम मृदुल सरल से हो प्यारे।
मैं सबकुछ तुमपर वार गई,
हृदय जब से हो तुम हारे।।

श्री संजय यादव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मज़दूर के संघर्ष की कथा

भारत के एक दूरस्थ प्रांत उत्तर प्रदेश में एक छोटा–सा गाँव था, जिसका नाम सोनापुर था। यह गाँव शहर की चकाचौंध भीड़–भाड़ से बहुत दूर, प्रकृति की गोद में नदी के किनारे बसा हुआ था। चारों ओर हरे–भरे खेत, कच्ची पगडंडियाँ, तालाब और नीम–पीपल के पेड़ थे। गाँव के लोग सरल जीवन जीते थे। यहाँ सुख–दुख सब मिल–जुलकर बाँटे जाते थे, पर गाँव में अपने नाम के विपरीत गरीबी अधिकतर घरों की सच्चाई थी। इसी गाँव में एक मज़दूर रहता था, जिसका नाम मनिराम था। उसका नाम तो मनिराम था, परन्तु वास्तव में वह बहुत गरीब आदमी था। उसके पास न तो ज़्यादा ज़मीन थी, न धन–दौलत और न ही ऊँची शिक्षा। उसके जीवन में जो था वह था –उसकी मेहनत, उसका स्वाभिमान और उसका ईमान।

मनिराम का बचपन बहुत ही कठिनाइयों में बीता था। उसके माता–पिता का देहांत तब हो गया था, जब उसकी उम्र सात वर्ष थी। माता पिता के देहांत के उपरांत उसको कम उम्र में ही दूसरों के खेतों में काम करने जाना पड़ता था। जब उसके हमउम्र के बच्चे खेलते थे, स्कूल जाते थे, उनके पीठ पर किताबों से भरा बैग रहता था तब मनिराम लोगों के खेतों में जाकर बोझ उठाता था। स्कूल जाने की इच्छा उसके मन में भी थी, लेकिन पेट की भूख ने उसे कभी पढ़ने का ज़्यादा मौका

ही नहीं दिया। बड़ी ही मुश्किल से वह सातवीं तक ही पढ़ पाया था। इन संघर्षों ने मनिराम को कठोर नहीं, बल्कि संवेदनशील बना दिया। वह दूसरों के दर्द को समझता था, क्योंकि उसने स्वयं अभाव झेला था। समय बीतने के साथ मनिराम का विवाह सोना से हो गया। सोना शांत स्वभाव की, सहनशील और कर्मठ स्त्री थी। दोनों पति पत्नी ने मिलकर एक छोटा–सा घर बनाया–मिट्टी की दीवारें, खपरैल की छत और एक संकरा–सा आँगन।

कुछ वर्षों बाद उनके घर एक बेटे ने जन्म लिया। उसका नाम उन्होंने रवि रखा। रवि अपने माता पिता की आँखों का तारा था। मनिराम ने अपने बेटे के जन्म से ही मन ही मन ठान लिया था कि "मैं चाहे जैसा भी रहूँ, पर मेरे बेटे को खूब पढ़ाऊँगा।" मनिराम की दिनचर्या बेहद कठोर थी। वह रोज़ तड़के उठता, हाथ–मुँह धोता, चाय बनाता और काम की तलाश में निकल पड़ता। कभी खेतों में हल चलाता, कभी ईंट–पत्थर ढोता, कभी सड़क निर्माण में मज़दूरी करता। इसके अतिरिक्त उसकी पत्नी को भी लोगो के घरों में जाकर काम करना पड़ता था। कई बार मनिराम को पूरा दिन काम नहीं मिलता, पर उसने कभी चोरी, भीख या बेईमानी का रास्ता नहीं चुना। रवि गाँव के सरकारी स्कूल में पढ़ता था। स्कूल की इमारत जर्जर थी, शिक्षक कम थे, लेकिन रवि पढ़ने में काफी तेज़ था। उसे किताबों से बहुत लगाव था। वह अक्सर पिता से सवाल पूछता–

"बाबू, दुनिया कितनी बड़ी है?"

मनिराम मुस्कुराकर कहता– "पढ़ोगे, तो खुद जान जाओगे।"

मनिराम खुद तो सातवीं तक ही पढ़ा था, लेकिन शिक्षा की ताकत को वह अपने जीवन काल के अनुभव से समझता था कि पढ़ाई ही एक ऐसी चीज़ है जो उसके बेटे को उस ज़िंदगी से बाहर निकाल सकती है, जिसमें वह खुद फँसा हुआ है। एक वर्ष गाँव में भीषण सूखा पड़ा। बारिश नहीं हुई, फसलें बर्बाद हो गईं। खेतों में काम मिलना भी बंद हो गया। मज़दूरों के लिए हालात बहुत खराब हो गए। कई परिवार

शहर पलायन करने लगे। मनिराम भी कई रातों तक सोचता रहा– "क्या हमें भी गाँव छोड़ देना चाहिए?" लेकिन उसने गाँव छोड़ने का फैसला नहीं किया। उसका मानना था कि जड़ें छोड़कर इंसान कमज़ोर हो जाता है।

इन दिनों घर में कई बार आधा पेट खाना मिलता तो कभी भूखे भी रहना पड़ता था। सोना कभी शिकायत नहीं करती थी, लेकिन मनिराम उसकी आँखों में चिंता साफ देखता था। उसे सबसे ज़्यादा डर इस बात का था कि कहीं रवि की पढ़ाई न छूट जाए। एक दिन रवि ने झिझकते हुए कहा– "बाबू, अगर पैसे नहीं हैं तो मैं स्कूल छोड़ दूँ।" यह सुनकर मनिराम का दिल काँप उठा। उसने सख़्त स्वर में कहा–

"ऐसी बात फिर मत कहना। चाहे मुझे कितना भी कष्ट क्यों न उठाना पड़े, तेरी पढ़ाई नहीं रुकेगी।" अगले ही दिन मनिराम पास के कस्बे में गया। वहाँ उसे एक आदमी मिला जो एक ईंट–भट्ठे का मालिक था, जब मनिराम ने उसे बताया कि उसको अपने बेटे की पढ़ाई के खर्च हेतु कुछ काम चाहिए तो मनिराम की बातें सुनकर ईंट–भट्ठे के मालिक ने उसे अपने भट्ठे पर नौकरी दे दी। यह काम बहुत कठिन था– भारी ईंटें उठाना, तेज़ धूप और कम मज़दूरी। उसके हाथों में छाले पड़ गए, पीठ दर्द से टूटने लगती थी, लेकिन उसने हार नहीं मानी।

रात को जब वह घर लौटता, तो रवि उसके पैरों को दबाता। मनिराम सोचता–

"यही तो मेरी ताकत है।" कई हफ्तों की मेहनत के बाद उसने कुछ पैसे जमा किए और रवि की किताबें, कॉपियाँ और फीस भर दी। एक दिन गाँव में सरकार की ओर से एक अधिकारी आया। उसका उद्देश्य गाँव की हालत का जायज़ा लेना था। वह जब मनिराम के घर पहुँचा, तो गरीबी साफ दिखाई दे रही थी, लेकिन घर में साफ–सफाई और आत्मसम्मान भी झलक रहा था।

अधिकारी ने पूछा– "तुम इतने अभाव में भी हिम्मत कैसे बनाए रखते हो?"

मनिराम ने उत्तर दिया– "साहब, हालात हमारे बस में नहीं होते, पर हिम्मत हमारे बस में होती है।" यह उत्तर अधिकारी के मन में बस गया। उसने रवि से बात की, उसकी पढ़ाई देखी और नोट्स बनाए। कुछ महीनों बाद रवि को एक सरकारी छात्रवृत्ति मिली, जिससे वह शहर के अच्छे स्कूल में पढ़ सकता था। रवि के शहर जाने का दिन आया। सोना की आँखें नम थीं। मनिराम ने बेटे को गले लगाकर कहा–

"बेटा, याद रखना, हम गरीब हैं लेकिन कमज़ोर नहीं। ईमानदारी कभी मत छोड़ना।"

शहर में रवि के लिए जीवन आसान नहीं था। नए माहौल, महँगी दुनिया और अमीर बच्चों के बीच वह खुद को अलग महसूस करता। कई बार उसका मज़ाक उड़ाया गया। लेकिन हर बार वह अपने पिता की मेहनत और त्याग को याद कर आगे बढ़ता रहा। रवि के शहर जाने के बाद घर पहले जैसा नहीं रहा। आँगन में जो चहल–पहल रहती थी, वह अब सन्नाटे में बदल गई थी। सोना अक्सर रवि की बचपन की बातें याद करके मुस्कुरा देती, फिर अचानक उसकी आँखें भर आतीं।

मनिराम बाहर से मज़बूत दिखता था, पर भीतर से वह भी बेटे को बहुत याद करता था। रात को जब वह थका–हारा घर लौटता, तो पहले जहाँ रवि दौड़कर पानी लाता था, अब वहाँ खालीपन था। एक दिन सोना ने धीमे स्वर में कहा– "अब घर बहुत सूना लगता है।"

मनिराम ने आकाश की ओर देखते हुए उत्तर दिया– "सूना नहीं है, सोना। यह वही घर है जहाँ से हमारा सपना उड़ान भर रहा है।" शहर की ज़िंदगी आसान नहीं थी। हॉस्टल के छोटे से कमरे में बैठकर रवि कई बार गाँव की मिट्टी को याद करता। वहाँ न खेतों की खुशबू थी, न नदी की कलकल की आवाज़। कक्षा में जब

अंग्रेज़ी में तेज़ी से पढ़ाया जाता, तो शुरुआत में उसे बहुत कठिनाई होती। कुछ बच्चे उसके कपड़ों और देहाती लहज़े का भी मज़ाक उड़ाते। एक दिन एक सहपाठी ने कहा– "तुम गाँव से आए हो? वहाँ तो कुछ नहीं होता होगा!"

रवि ने शांत स्वर में जवाब दिया– "वहाँ सब कुछ होता है–मेहनत, ईमानदारी और सच्चा दिल।" धीरे–धीरे उसने खुद को साबित करना शुरू किया। वह लाइब्रेरी में घंटों बैठकर पढ़ता। छात्रवृत्ति के पैसे बचाकर अतिरिक्त किताबें खरीदता। छुट्टियों में घर न जाकर कोचिंग में समय बिताता। हर परीक्षा में उसके अंक बेहतर होते गए। शिक्षकों ने भी उसकी लगन को पहचान लिया। उधर गाँव में एक सर्दी की रात मनिराम की तबीयत अचानक बिगड़ गई। वर्षों की कठिन मज़दूरी ने उसके शरीर को अंदर से कमज़ोर कर दिया था।

सोना ने किसी तरह पड़ोसी की मदद से उसे कस्बे के अस्पताल पहुँचाया। डॉक्टर ने कहा–

"शरीर बहुत थक चुका है। अब इन्हें आराम की ज़रूरत है।" सोना ने यह बात रवि से छिपाने की कोशिश की, ताकि उसकी पढ़ाई प्रभावित न हो। लेकिन सच्चाई ज़्यादा दिनों तक छिपी नहीं रह सकी। रवि को जब पता चला, तो वह छुट्टी लेकर गाँव पहुँचा। पिता को कमज़ोर अवस्था में देखकर उसका दिल भर आया।

मनिराम ने उसका हाथ पकड़कर कहा–

"रो मत। अगर तू डगमगा गया, तो मेरी मेहनत अधूरी रह जाएगी।" यह शब्द रवि के लिए संकल्प बन गए। रवि ने तय कर लिया कि वह केवल नौकरी नहीं, बल्कि बड़ा अधिकारी बनेगा। उसने सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी शुरू की।

दिन में कॉलेज, रात में पढ़ाई। कई बार नींद आँखों से कोसों दूर रहती।

पहला प्रयास असफल रहा। रवि टूट गया। उसने पिता को फोन किया–

"बाबू, मैं हार गया।"

मनिराम ने हँसते हुए कहा–

"अरे पगले, खेत में बीज बोते ही फसल नहीं उगती। धैर्य रख।" दूसरे प्रयास में भी वह इंटरव्यू तक पहुँचकर रह गया। तीसरे प्रयास में, जब परिणाम घोषित हुए, तो उसका नाम सूची में था। रवि भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित हो गया था। जब रवि अधिकारी बनकर गाँव लौटा, तो वह केवल एक बेटा नहीं, बल्कि परिवर्तन का प्रतीक बनकर लौटा था। उसने सबसे पहले गाँव के प्राथमिक विद्यालय को मॉडल स्कूल में बदलवाया।

नदी पर पुल बनवाया, ताकि बरसात में लोग अलग–थलग न पड़ें। महिलाओं के लिए स्वयं सहायता समूह शुरू करवाए। किसानों के लिए आधुनिक तकनीक की जानकारी दिलवाई। गाँव, जो कभी उपेक्षित था, अब विकास की राह पर था। एक शाम मनिराम आँगन में बैठा था। बच्चे स्कूल से लौट रहे थे–कंधों पर बैग, चेहरों पर सपने। रवि उसके पास बैठ गया। मनिराम ने धीमे स्वर में कहा–

"बेटा, याद रख– पद बड़ा होने से आदमी बड़ा नहीं होता। आदमी बड़ा होता है अपने कर्म से।"

कुछ वर्षों बाद, एक शांत सुबह, मनिराम ने दुनिया को अलविदा कह दिया। पूरा गाँव उसके अंतिम संस्कार में उमड़ पड़ा। लोग कह रहे थे– "वह सिर्फ मज़दूर नहीं था, वह एक युग था।" रवि ने गाँव के नए स्कूल का नाम रखा– 'मनिराम सोना विद्यालय', जिसके प्रवेश द्वार पर एक पंक्ति लिखी गई–

"मेहनत से बड़ा कोई धन नहीं और शिक्षा से बड़ा कोई हथियार नहीं।" आज भी जब सोनापुर के बच्चे स्कूल जाते हैं, तो वे उस मज़दूर की कहानी सुनते हैं, जिसने गरीबी को अपनी पहचान नहीं बनने दिया।

श्री नवीन
लेखापरीक्षक

राम ही मेरे प्राणपति हैं

राम ही मेरे प्राणपति हैं और वैदेही प्राणहिता हैं
एक बने हैं श्वास हमारी एक बनी जीवन रेखा है

कोई कहे जगजननी इनको कोई कहे मिथिला की बाला
कोई कहे ये परम ब्रह्म हैं कोई कहे दशरथ का लाला
इस उलझन में मैं क्यों उलझूं मुझको तो ये बात पता है
राम ही मेरे प्राणपति हैं और वैदेही प्राणहिता हैं

कोई कहता इनको रामलला जिसने मधुमास में जन्म लिया
कोई कहता इनको पुरूषोत्तम जिसने वनवास में जन्म लिया
पर मैंने अपने हृदय में तो बस इस पंक्ति को छाप रखा है
राम ही मेरे प्राणपति हैं और वैदेही प्राणहिता हैं

जब जयंत जैसे दुष्ट को भी माँ सीता अपना कहती है
फिर राम के बाणों से भी बस करुणा की वर्षा होती है
इस विश्वास के साथ ही मैंने इनको सब कुछ सौंप दिया है
राम ही मेरे प्राणपति हैं और वैदेही प्राणहिता हैं

जीने की इच्छा ही ना हो तो अमृत पी कर क्या करना है
मन में राम जानकी ना हों तो फिर जी कर क्या करना है
दशरथ ने भी प्राणों को ये कहते–कहते त्याग दिया है
राम ही मेरे प्राणपति हैं और वैदेही प्राणहिता हैं

जीवन की सब चिंता का तुम त्याग करो कंकर की भांति
राम जपो बस राम जपो, बस राम जपो शंकर की भांति
इतनी सरल सी बात तो अब ये मूर्ख 'नवीन' भी समझ गया है
राम ही मेरे प्राणपति हैं और वैदेही प्राणहिता हैं

श्री मनोज कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जिंदगी एक दौड़

इंसान के जीवन का यदि विश्लेषण किया जाए तो पता चलता है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक इंसान दौड़ता रहता है; बल्कि यूँ कहें कि इंसान सारी उम्र अपने लिए, अपने परिवार के लिए, समाज, देश के लिए दौड़ता रहता है। यह दौड़ एक मैराथन है, स्प्रिंट नहीं और हमें अंत तक दृढ़ रहने और विश्वास योग्य बने रहने के लिए दौड़ लगानी पड़ती है। मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी, मैंने दौड़ पूरी कर ली है और मैंने विश्वास बनाए रखा है।

अंततः जीवन तभी एक दौड़ है, जब हम स्वयं से प्रतिस्पर्धा कर रहे हों। यह इस बारे में है कि कौन फिनिश लाईन पार करेगा– न कि कौन इसे सबसे पहले पार करेगा। जो शुरुआत में सबसे पीछे था वह भी जीत सकता है और बीच में रहने वाला भी कम से कम भरपाई तो कर ही सकता है। "जीवन एक दौड़ है, आपको दौड़ना होगा।"

मेरे जीवन की दौड़ किस बारे में है?

जीवन एक दौड़ क्यों है?

जीवन में दौड़ क्या है?

जीवन के तीन अर्थ क्या हैं?

सुसंगति का मतलब जीवन को समझना है, उद्देश्य का मतलब लक्ष्य निर्धारित करना और उन्हें प्राप्त करना है तथा महत्त्व का मतलब खुद को दुनिया से जुड़ा हुआ समझना–

उद्देश्यः जीवन के लिए स्पष्ट लक्ष्य और दिशा होना जिससे पता चले कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं और जीवन क्यों जी रहे हैं?

पुरुषार्थः यह जीवन के चार उद्देश्यों की बात करता है, जिनमें से तीन प्रमुख अर्थों को दर्शाते हैं।

- धर्मः नैतिक कर्तव्य और सही आचरण
- अर्थः धन और भौतिक समृद्धि (भौतिक रूप से)
- कामः इच्छाओं और आनंद की पूर्ति (नियंत्रित रूप से)
- मोक्षः अंतिम मुक्ति और परम शांति
- सरल शब्दों में खुद को जानना और बढ़ना।

संबंधः दूसरों से जुड़ना, प्यार देना और समाज में सकारात्मक योगदान करना–

जीना और अनुभव करना, सांस लेना, भोजन करना और जीवन की बुनियादी जरूरतों (भौतिक) के साथ–साथ आध्यात्मिक यात्रा करना।

जीवन का अर्थ हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है और इन सभी पहलुओं का एक मिश्रण हो सकता है। जीवन का मतलब जीवित रहना, सांस लेना, भोजन करना और शरीर की आवश्यकताओं को पूरा करना है। जीवन का उद्देश्य आत्मा

की उन्नति, धर्म का पालन और मोक्ष प्राप्त करना है। जीवन का अर्थ स्वयं को जानना, सीखना और विकसित करना है, जिससे हम अपने पूर्ण संभावित तक पहुँच सकें। जीवन का अर्थ अपने परिवार, मित्रों, सगे–संबंधियों और समाज के साथ संबंध बनाना और उन्हें प्रेम और समर्थन देना, शाब्दिक अर्थों में सही हो सकता है परन्तु हमारा सारा जीवन इन्हीं मार्गों के ऊपर दौड़ता रहता है। अंत में जब मृत्यु के आखिरी पड़ाव से किसी बीमारी या कोई अन्य कारण से मृत्यु शैय्या पर पड़ा यह सोचता है कि इस भागम–भाग की जिंदगी में मैंने क्या पाया और क्या खोया?

अरबों–खरबों की संपत्ति होकर भी मैं अपना दर्द कम नहीं कर सकता, शोहरत और दौलत तो सब आती–जाती रहती है लेकिन ज़िंदगी और कुछ रिश्ते एक बार ही मिलते हैं। इंसान कितना भी क्यूँ न कमा ले और लाखों लोग भलें उसकी तारीफ करें; मौत के सामने इन सबका कोई महत्त्व नहीं। आप पैसों से महंगा बेड खरीद सकते हो, कार, बंगला, कोठी खरीद सकते हो, अपने निजी कामों के लिए लोग रख सकते हो, लेकिन कोई आपकी बीमारी या दर्द अपने ऊपर नहीं ले सकता। 100 रुपए की घड़ी हो या 01 लाख रुपए की, वक्त तो एक ही बताती है, लेकिन पैसों से ज़िंदगी नहीं खरीद सकते।

ज़िंदगी में सबसे ज़रुरी क्या है? यह समझने के लिए मौत का इंतजार मत करिए। आपके अपने रिश्ते पैसों से ज़्यादा कीमती हैं। आपकी खुद की ज़िंदगी बेशकीमती है; उसे दूसरों के हिसाब से मत जिएं..............

फिर हम जानते हुए भी अनजान बने हुए हैं और सिर्फ दौड़े जा रहे हैं–आखिर क्यों–? और कब तक............?

श्री गुंजन जाजोरिया
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पधारो म्हारे देस

काफी दिनों से सोच रहा था कि परिवार के साथ कहीं ट्रिप पर जाऊं। दिल्ली से बहुत ज़्यादा दूर जाने का भी मन नहीं था, बस इतना कि अपनी गाड़ी से जाऊं तो सात आठ घंटे में पहुंच जाएं। पहाड़ों पर मैं पिछले साल ही गया था इस वजह से पहाड़ों पर जाने का प्लान नहीं बनाया। ढूंढने लगा दिल्ली के आसपास की जगह, तो टकराया राजस्थान। जब और गहराई में खोज की तो देखा कि राजस्थान में बहुत सारी सुंदर जगहें हैं घूमने की। सिर्फ लोकप्रिय जगह ही नहीं उसके अलावा भी ऐसी खूबसूरत जगहें है जहां पर कम पर्यटक जाते हैं। एक ऐसी ही जगह मिली जो मेरे परिवार के ट्रिप के लिए उत्तम थी और वह जगह थी बूंदी। खोज की तो पता लगा बूंदी, राजस्थान में एक बहुत ही सुंदर एवं ऐतिहासिक जगह है। वहां कई तरह के किले, झीलें, मंदिर व सीढ़ीदार बावड़ियां हैं। वास्तव में बूंदी को सीढ़ीदार बावड़ियों का शहर भी कहा जाता है। दिल्ली से तकरीबन 480 किमी दूर ये शहर जो मेरी यात्रा के लिए उत्तम साबित हुआ। दो दिन में योजना तय हो गई और हम अपनी गाड़ी लेकर, दिसंबर की एक सर्द सुबह, बूंदी की तरफ रवाना हो गए। दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेसवे के रास्ते का लुत्फ लेते हुए हम तकरीबन शाम को बूंदी पहुंच गए।

बूंदी पहाड़ियों से घिरा सुरम्य, घने जंगल में स्थित एक नगर है और राजस्थान का एक महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। बूंदी एक पूर्व रियासत थी। मान्यता के

अनुसार, बूँदा मीना ने 164 ई. में आमेर से आकर बूंदी की स्थापना की थी और उनके वंश के अंतिम शासक जैता मीना थे। बूँदा मीना राजस्थान के बूंदी शहर के ऐतिहासिक संस्थापक माने जाते हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र पर शासन किया था। मीना समुदाय के अनुसार, शहर का नाम उनके नाम पर पड़ा और उन्होंने इसे बसाया था। हालांकि, इसे लेकर राजपूत समाज के साथ विवाद है, जो राव देवा हाड़ा को संस्थापक मानते हैं जिन्होंने इसकी स्थापना सन् 1242 ई. में जैता मीना को हरा कर की थी।

हमने अपनी रहने की व्यवस्था नवल सागर झील के किनारे स्थितः एक रिज़ॉर्ट में की थी। रिज़ॉर्ट के बिल्कुल विपरीत तारागढ़ किले का खूबसूरत नज़ारा दिखता था। जोकि रात के समय कृत्रिम पीली रोशनी में जगमगा उठता था। नवल सागर झील एक कृत्रिम झील है तथा पास में बने महलों और किले का प्रतिबिम्ब इस झील में लहराता दिखाई देता है, जो कि अद्वितीय है। इस के बीच में भगवान वरूण देव को समर्पित एक मंदिर है, जो कि आधा जल मग्न दिखाई पड़ता है। रात का भोजन करके हमने रिजॉर्ट की सैर की और दिनभर की थकान को अलविदा कहा।

अगली सुबह हम बूंदी में गढ़ पैलेस देखने निकले। गढ़ पैलेस बूंदी पर जाने के लिए सीधी चढ़ाई चढ़ते हुए जब ऊपर की तरफ चलते हैं तो हम दो मुख्य द्वारों पर पहुंचते हैं, जो कि गढ़ पैलेस के प्रवेश द्वार हैं। इन दोनों द्वारों में 'हाथी पोल' सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इस गेट के दोनों तरफ विशाल पत्थर की शिला को तराश कर बनाए गए दो हाथी, बिगुल बजाते हुए नज़र आते हैं, जिसे बूंदी के महाराजा राव रतन सिंह द्वारा बनवाया गया था। यह भव्य और विशाल (हाथी पोल) वास्तुकला तथा स्थापत्य कला का नायाब नमूना है, जिसे देखकर वैभव और एश्वर्य के भाव से मन अभिभूत हो जाता है। गढ़ पैलेस के प्रवेश द्वार के रूप में 'हाथी पोल' केवल गढ़ के लिए ही नहीं बल्कि पूरे बूंदी शहर में आने वाले पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का प्रतीक है।

गढ़ पैलेस भारत के सबसे बड़े महलों में गिना जाता है। इसके अंदर कई महलों का एक संग्रह है जो विभिन्न शासकों द्वारा तीन शताब्दियों की अवधि में बनाए गए थे। गढ़ पैलेस अपनी राजपुताना वास्तुकला के लिए जाना जाता है, जो झरोखों और स्तंभों में आसानी से देखा जा सकता है, जिनमें से कई में हाथी की नक्काशी है। यहाँ के कुछ प्रसिद्ध महलों में छत्तर महल, फूल महल और बादल महल शामिल हैं। गढ़ पैलेस के एक भाग में प्रसिद्ध चित्रशाला है, जिसमें एक आकर्षक मंडप और लघु भित्ति चित्रों की गैलरी है जिसमें प्रवेश शुल्क नहीं हैं। गढ़ पैलेस आगंतुकों के लिए सुबह आठ बजे से शाम पांच बजे तक खुला रहता है। केवल एक छोटा–सा प्रवेश शुल्क है जिसका भुगतान करना पड़ता है। यदि पर्यटकों को इस खूबसूरत महल की कहानियों और इतिहास के बारे में जानना हो तो वह गाइड किराए पर ले सकते हैं।

बूंदी के गढ़ पैलेस का 'छत्तर महल' किसी ज़माने में बहुत शानदार बगीचों से भरपूर महल था, जिसमें विभिन्न कलात्मक फवारें लगे हुए थे तथा बहुत से छोटे कुण्ड थे, जिनमें विविध प्रजातियों की अनोखी विदेशी मछलियाँ हुआ करती थीं। 'छत्तर' का मतलब है–पेन्टिंग। इस महल का नाम इसीलिए "छत्तर महल" रखा गया है क्योंकि इसकी सभी दीवारों और छतों को बेहद सुन्दर व आकर्षक पेन्टिंग्स

से सजाया गया है। पुराने ज़माने में अट्ठारहवीं शताब्दी के दौरान, बूंदी शहर मिनिएचर पेन्टिंग्स बनाने वाले कलाकारों का गढ़ हुआ करता था तथा यहाँ के राजा मिनिएचर पेन्टिंग्स को बहुत बढ़ावा देते थे। देवी–देवताओं, युद्ध के दृश्यों तथा हाथियों और 'राधा कृष्ण' के विभिन्न क्रिया कलापों के चित्रों की पेन्टिंग्स एक ऐसी विशेष विनम्रता और नज़ाकत को दर्शाती है जो आपको केवल इसी क्षेत्र की कला में देखने को मिलेंगी। छत्तर महल में एक और 'चित्रशाला' भी है जिसे महाराजा उमेद सिंह जी के द्वारा बनाया गया था। यह चित्रशाला चूंकि महल के एकदम अन्दरूनी हिस्से में है, इसीलिए यहाँ बनी पेंटिंग्स को सूर्य की रोशनी तथा मौसम की नमी से अभी तक कोई नुकसान नहीं पहुंच पाया है तथा कलाकारों द्वारा पेन्टिंग्स को दी गई चमक और रंग अपने मूल स्वरूप में मौजूद हैं। सब कुछ मिला कर देखा जाए तो छत्तर महल की छतें और दीवारें एक नाटकीय चित्रमाला का दृश्य प्रस्तुत करती हैं, जिसे देखना वास्तव में महत्वपूर्ण है।

गढ़ पैलेस जिस पहाड़ी पर स्थित है उसी पहाड़ी के ऊपर बना है तारागढ़ किला। राजपूत शैली में 1354 ई. में निर्मित यह किला बूंदी की सबसे प्रभावशाली संरचना है। यह किला और महल ऊँची पहाड़ी पर बने हैं। इसकी सुन्दरता का अनुमान इसके अन्दर बने देवालय, स्तंभ, शीर्ष मंडपों वाली छतरियाँ और हाथी व कमल के रूप में सजी वक्राकार छत से लगाया जा सकता है। एक भव्य किला होने के नाते यहाँ बहुत चलना होता है इसलिए पर्यटकों को आरामदायक जूते/चप्पलों का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही साथ तरल पदार्थ की भरपूर मात्रा रखें। दिसम्बर की सर्दी में भी किले पर चढ़ने में काफी थकान महसूस हो जाती है। तारागढ़ किले से नवल सागर झील और बूंदी शहर का विहंगम दृश्य नज़र आता

है। लगभग पूरा दिन हमें ये दोनों जगह देखने में लग गया और बहुत थकान भी हो गई। वापस आते समय आस–पास के बाजार में घूमते हुए हम अपने निवास स्थल पर पहुंचे और भोजन करके दिन भर की सुहानी यादों के साथ सो गए।

अगली सुबह हम देखने निकले सुख महल, जो जैत सागर झील के निकट बना हुआ है। यह रमणीक झील, पहाड़ियों से घिरी हुई है और सर्दियों और मानसून के मौसम में, ढेरों कमल के फूलों से भरी रहती है। सुख महल की शांति वाकई सुख का एहसास देती है। यह एक भव्य ग्रीष्मकालीन महल है जो शाही वैभव की गाथा सुनाता है। बूंदी के पूर्व शासकों के लिए गर्मी के मौसम के दौरान यह प्रवास के लिए बनाया गया था। इसका निर्माण उमेद सिंह के शासनकाल में हुआ था। यह महल दो मंज़िला है। इसी महल में अंग्रेज़ी साहित्य में नोबेल पुरस्कार विजेता लेखक 'रूडयार्ड किपलिंग' ने अपना उपन्यास 'किम' लिखा था और उसके कुछ अंश का फिल्मांकन भी यहीं हुआ था। बूंदी स्थित सुख महल के कक्ष में बैठकर उन्होंने बहुचर्चित 'द जंगल बुक' नामक पुस्तक के कुछ अंश लिखे थे। इस रचना में बूंदी के अतुलनीय प्राकृतिक सौंदर्य का अद्वितीय वर्णन है।

सुख महल के दर्शन के बाद हम लोग पहुंचे रानी जी की बावड़ी, जिसे 1699 में, बूंदी के शासक राजा राव अनिरुद्ध सिंह की छोटी रानी, रानी नाथावती जी द्वारा बनवाया गया था। बूंदी में 50 से ज़्यादा सीढ़ीदार बावड़ियां हैं। रानी जी की बावड़ी, पर्यटकों के द्वारा 'क्वीन ऑफ स्टैपवैल', के नाम से जानी जाती है। इस बावड़ी का मुख्य द्वार आमंत्रण देता प्रतीत होता है। बहुमंज़िला बावड़ी के तोरणद्वार पर हाथी की उत्कृष्ट नक्काशीदार प्रतिमा स्थापित है, जिसमें उनकी सूंड को अन्दर की ओर मोड़ा गया है, जिससे ऐसा आभास होता है मानो हाथी, बावड़ी से पानी पी रहा है। अफसोस की बात बस ये है कि इतनी सुंदर बावड़ी का सरकार द्वारा उचित ध्यान नहीं रखा गया। अगर इसकी साफ–सफाई, साज–सज्जा पर ध्यान दिया जाए तो इससे आकर्षक बावड़ी शायद ही कहीं देखने को मिले।

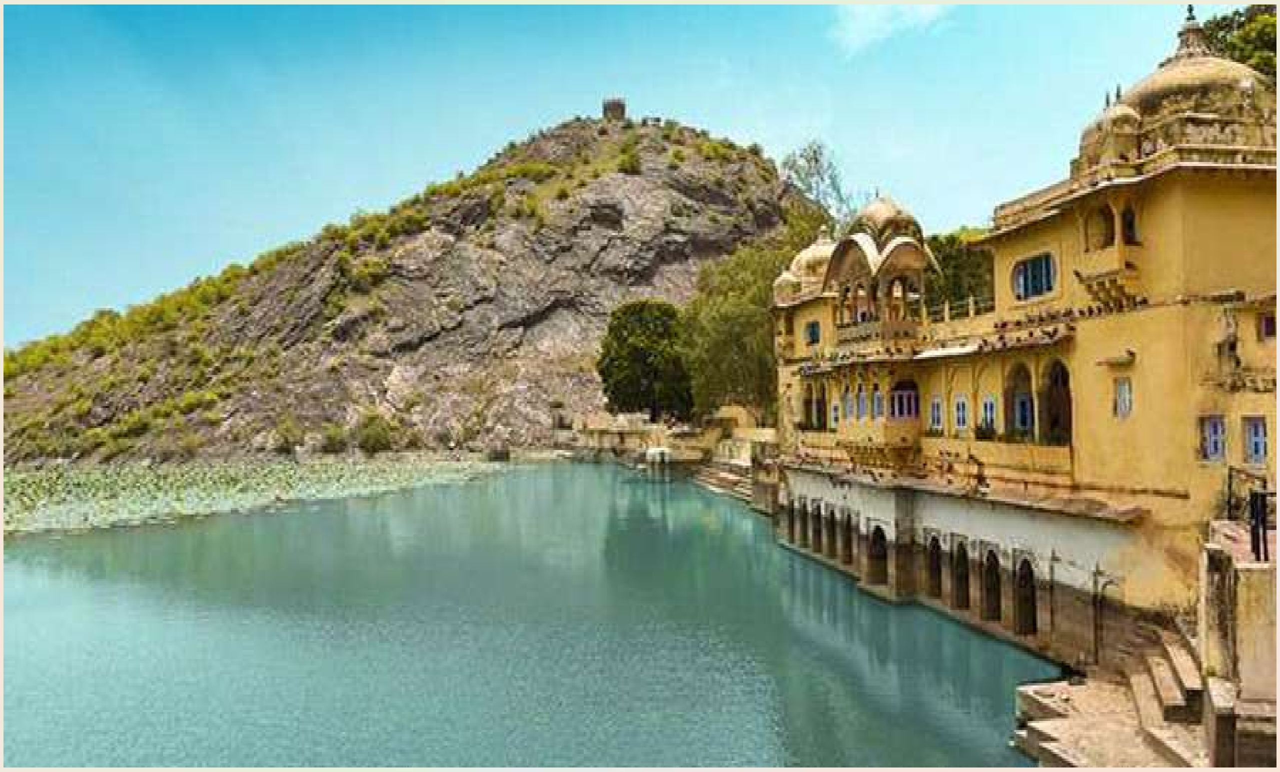

रानी की बावड़ी से बाहर निकलकर हम लोगों ने बूंदी की चाट पकोड़ी का लुत्फ उठाया और देखने निकले चौरासी खम्भों की छतरी। बूंदी के महाराजा अनिरूद्ध सिंह द्वारा अपनी एक प्रिय सेवादार की स्मृति में बनवाई गई छतरी, वाकई चौरासी खम्भों पर टिकी है। यह एक मनमोहक तथा सुन्दर संरचना है। इसकी कलात्मक

नक्काशी में हिरण, हाथी तथा अप्सराओं का चित्रांकन होने के कारण पर्यटक इसकी बहुत प्रशंसा करते हैं।

बूंदी शहर के बेहतरीन किले, झीलें, मंदिर व सीढ़ीदार बावड़ियां का आनंद लेने के बाद अब बारी थी कुछ हटके देखने की। ये जगह मेरी यात्रा सूची के दूसरे स्थान पर थी और इसकी वजह थी इसका प्राकृतिक होना। जगह थी बूंदी शहर से 35 किमी दूर, भीमलत महादेव मंदिर व भीमलत झरना। यह मंदिर अरावली पर्वत श्रृंखला में भीमलत जलप्रपात नामक एक विशाल झरने के निकट स्थित है और सुंदर परिदृश्य वाला एक प्रसिद्ध पिकनिक स्थल भी है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि महाभारत काल में, पांडव अपने 12 वर्षों के वनवास के दौरान यहां आए थे। उस समय, पीने का पानी जुटाने के लिए भीम ने ज़मीन पर पैर पटका और वहां से पानी की एक धारा फूट निकली। इस खूबसूरत प्राकृतिक जलप्रपात की ऊंचाई लगभग 150 फीट है और इसका क्षेत्रफल 6 किलोमीटर है। जलप्रपात का सबसे सुंदर दृश्य इसका पानी है, जो ऊंचाई से एक कुंड में गिरता है और आगे बढ़ता है। दिसम्बर माह होने के बावजूद, इस झरने में गिरने वाले पानी की मात्रा काफी अधिक थी जो यह दर्शाता है कि भीमलत जलप्रपात बरसात के मौसम में और भी आकर्षक हो जाता है और बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह जलप्रपात राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है।

अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव पर हमने निर्णय लिया था मेरी सूची के पहले नंबर के स्थान पर जाने का, जोकि था गराड़िया महादेव का मंदिर। यह कोटा का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है और चंबल नदी के किनारे स्थित है। यह स्थान कोटा से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर एनएच–76 पर डाबी और चित्तौड़गढ़ के पास स्थित है। यह मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिज़र्व की पहाड़ियों और चंबल नदी के भव्य नज़ारों के लिए जाना माना इको–टूरिज़्म स्थल है। यह जगह पर्यटकों के मुख्य आकर्षणों से थोड़ी दूर और एकांत में है, लेकिन यहाँ तक पहुँचने की यात्रा सार्थक है। यह मंदिर एक रिज़र्व फॉरेस्ट का हिस्सा है और इसमें प्रवेश लेने के लिए प्रति

व्यक्ति एवं प्रति वाहन टिकट लेनी होती है। प्रवेश टिकट थोड़ी महंगी लग सकती है, मगर यहाँ की अद्भुत सुंदरता और यादगार नज़ारों के आगे बाकी सब फीका लगता है। रिज़र्व फॉरेस्ट होने की वजह से आपको यहाँ कुछ जंगली जानवर भी नज़र आ सकते हैं। अगर आप शानदार नज़ारों के शौकीन हैं, तो यह जगह आपको निराश नहीं करेगी। यहाँ से चंबल नदी घाटी और मैदानों का सबसे मनमोहक दृश्य दिखाई देता है जिससे सैलानी मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

मंदिर तक पहुँचने के लिए कुछ सीढ़ियाँ उतरनी पड़ती हैं, जिसके उपरांत आपको महादेव के दर्शन होते हैं। अधिकांश लोग एकांत और मनमोहक दृश्य के कारण यहाँ आते हैं और यह जगह पिकनिक के लिए भी काफी लोकप्रिय है। प्रकृति प्रेमी यहाँ घंटों बैठकर इसकी शांति और निर्मल सुंदरता का आनंद ले सकते हैं।

यह जगह हूबहू अमरीका के पेज शहर के बहुचर्चित एरिजोना स्थितः 'ग्रैंड कैनियन' पहाड़ी से मेल खाती है जिसे 'हॉर्स्शू बेन्ड' कहा जाता है। गराड़िया महादेव मंदिर के सामने बहती हुई चंबल नदी को घोड़े की नाल के आकार में मुड़ते हुए देखा जा सकता है। 500 फीट की ऊंचाई से चंबल नदी के शानदार घुमावदार दृश्य, इसकी मनमोहक सुंदरता और यादगार नज़ारे पर्यटकों के मन में उत्साह जगा देते हैं। यदि आप शांति, आधुनिक सुख–सुविधाओं से दूर, प्रकृति की भव्यता और एकांत की तलाश में हैं, तो इससे बेहतर जगह आपको नहीं मिलेगी। ऐसी शांति और प्राकृतिक सुंदरता गराड़िया महादेव मंदिर को एक लोकप्रिय जगह बनाती है।

पाँच दिनों की इस यात्रा में हमने बेहतरीन किले, बावड़ियाँ, झीलें, झरने व महल देखे। जितनी उम्मीद की थी उससे कहीं अच्छी ये यात्रा रही। ऊपर से हल्के सर्द व सुहाने मौसम ने जैसे इस यात्रा में चार चाँद लगा दिए। बूंदी एक बहुत खास जगह है। यह इतिहास के पन्नों में दर्ज एक बेहतरीन कहानी सुनाती है और पर्यटकों का मन मोह लेती है। अपनी इस यात्रा के सुखद अनुभव को दिल में बसा कर हम वापस दिल्ली की ओर रवाना हो गए।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान कार्यालय की गृह पत्रिका संवाद के 'सप्तम' अंक का लोकार्पण

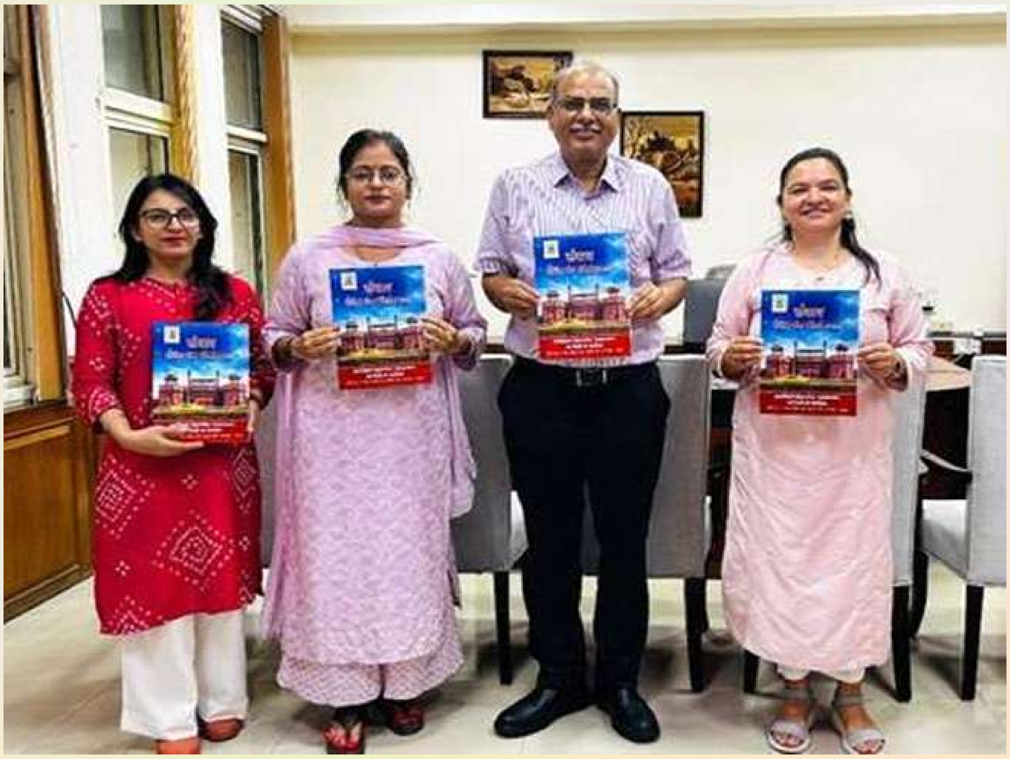

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागी कार्मिक

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियां

दिल्ली क्षेत्र के सामूहिक ऑडिट दिवस, 2025 के दौरान कार्यालय में आयोजित कुछ खेल प्रतियोगिताओं के दृश्य

ऑडिट दिवस 2025, समापन समारोह की झलकियाँ

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
Comptroller and Auditor General of India
Supreme Audit Institution of India
लेखापरीक्षा दिवस / AUDIT DIWAS
16 नवम्बर, 2025

कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशालाएं

वर्ष 2025 में सेवानिवृत्ति समारोहों के चित्र

श्री विजयपाल, उप–निदेशक

श्री अजयकुमार कृपाशंकर, निदेशक

श्री प्रेमप्रकाश, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री पवन कुमार माजी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री अजय सत्या, लेखापरीक्षक

श्री निखिल अरोड़ा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा विजित प्रतियोगिताएं

कार्यालय में आयोजित स्वास्थ्य जांच शिविर एवं रक्तदान शिविर

DGA

दिसम्बर 2025 को समाप्त तिमाही हिंदी बैठक संबंधी कुछ छायाचित्र

सुश्री मनीषा, लेखापरीक्षक द्वारा बनाई गई कुछ चित्राकृतियाँ

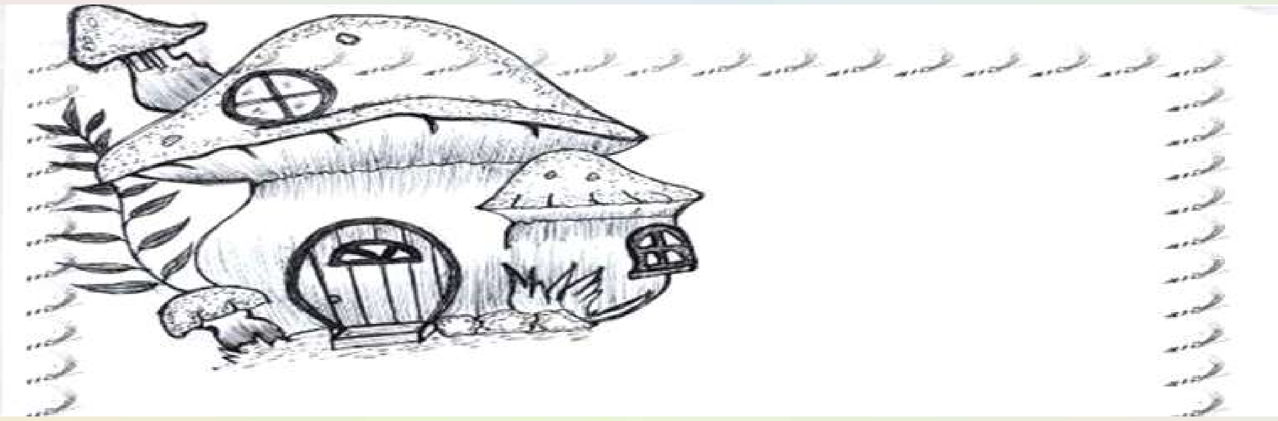

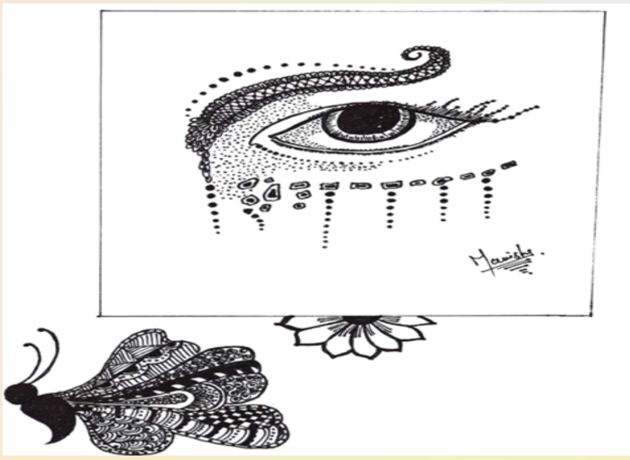

राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह 2025, हैदराबाद तथा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2025, नई दिल्ली में इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग की सहभागिता एवं सम्मेलन संबंधी कुछ छायाचित्र

भारत सरकार, गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग

हिंदी दिवस-2025 एवं पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
હિન્દી દિવસ-2025 અને પાંચમું અખિલ ભારતીય રાજભાષા સંમેલન

भारत सरकार, गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह
राजभाषा विभाग @50

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना)

नई दिल्ली-110002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT

(INFRASTRUCTURE), NEW DELHI - 110002